ब्रॉड अविनाशी ड्रामा में एक पात्र है अविनाशी

डी.वी.डी. नं. 385 वी.सी.डी. नं. 2326 ऑडियो नं. 2812 मु.ता. 05.11.66

रात्रि क्लास चल रहा था- 05.11.1966। दूसरे पेज के अंत में बात चल रही थी- आज की दुनिया में जो अपन को राजाएँ समझ बैठे हैं माना राजाई की गद्दी पर बैठे हैं, उन राजाओं को भी निमंत्रण मिलेंगे आख़िर में। उनको चिट्ठी में भी समझाय सकते हैं कि आप पूज्य देवी-देवताएँ थे, फिर द्वापरयुग से पुजारी बने और उन नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने वाले, ऊँच-ते-ऊँच राजाओं के राजा- महाराजा को पूजने लगे और अभी तुमको नो ताज। जिनको पूजने लगे, उनको डबल ताज- पवित्रता का भी ताज और पवित्र दुनिया स्थापन करने वाला ज़िम्मेवारी का भी ताज और तुम अभी उनके पुजारी बन पड़े तो तुमको अभी नो ताज- पवित्रता का भी ताज नहीं रह गया और पवित्र दुनिया को बनाने वाला जो श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ ताज है- 'ज़िम्मेवारी का ताज', वो भी नहीं रहा, अभी वो ज़िम्मेवारी का ताज भी खलास हो गया और द्वापर में जो राजाओं को स्थूल ताज था, वो स्थूल ताज भी तुम्हारा खलास हो गया। अभी फिर तुम आ करके पूज्य देवता बनो; क्योंकि भगवान आकर मनुष्य को देवता बनाते हैं। ये भगवान की पढ़ाई है, जिसका नाम है- राजयोग की पढ़ाई, राजा बनाने वाला योग, राजाई की पढ़ाई। द्वापरयुग से कोई भी धर्मपिता नहीं हुए, जिन्होंने ये राजाई की पढ़ाई पढ़ायी हो। 'राजा' माना स्वाधीन। ये स्वाधीनता की पढ़ाई कोई ने भी नहीं पढ़ायी, सब आधीन बनाने वाले रहे। तो कोई भी राजयोग नहीं सिखाय सकते। ये राजयोग सिर्फ़ एक परमपिता परमात्मा ही सिखाय सकते हैं, जो राजाओं का भी राजा बनाते हैं। तो फिर तुम अब उस पतित-पावन परमपिता परमात्मा को याद करो, जो एवरप्योर है, सदा पवित्र है। उस पावनतम को याद करेंगे तो पावन बन करके, स्व-चक्र को याद करते हुए, 'स्व' माने 'आत्मा', आत्मा ने कैसे 84 के चक्र में चक्कर लगाया है, उस बात को याद करो और समझो। ऐसा करने से तुम फिर चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे; क्योंकि राजा बनाने के लिए, जो पहले राजाएँ थे, उन आत्माओं को समझाना भी तो पड़ता है। जो पहले सतोप्रधान थे, फिर चार अवस्थाओं से गुजरते-2 सतोसामान्य, रजो और तमो बन पड़े। परंतु अभी तमोप्रधान दुनिया में जो तमोप्रधान राजाएँ हैं, उनको मग़रूरी भी तो बहुत है, अहंकार भी तो बहुत चढ़ा हुआ है; क्योंकि वो समझते हैं कि हम रामराज्य लाएँगे, हम राम का घर बनाएँगे, नई दुनिया बनाएँगे। तो वो उस नशे में रहते हैं; परंतु दुनिया के सभी कार्य पवित्रता से ही सम्पन्न होते हैं और ये तो बहुत ऊँचा काम है- 'नरक की दुनिया को स्वर्ग बनाना, रावण-राज्य को रामराज्य बनाना'। ये काम तो परमपवित्र परमपिता परमात्मा का ही है। तो उन मग़रूर आत्माओं को, अहंकारी आत्माओं को, जो बच्चे यहाँ इस दुनिया में कुर्सी पर बैठे हैं, अभी तो एम.पी., एम.एल.ए. बन गए हैं, फलाना बन गए हैं; फिर भी उनको समझाने के लिए टाइम तो बहुत पड़ा है ना बच्ची! कब की मुरली है? 1966 की मुरली है। तो 1966 से ले करके और संगमयुग 2036 तक पूरा होता है। विश्व की सभी आत्माओं को ये बात समझाने के लिए, टाइम तो बहुत पड़ा है। तब तलक ये बच्चियाँ भी राजयोग की पढ़ाई को अच्छी तरह सीख रही हैं।

अभी समझो ये बच्चियाँ, जैसे दर्ज होते हैं ना- पहली कक्षा, पहली पौड़ी, पहली बार, पढ़ते-2 दसवीं कक्षा, दसवीं बारी, फिर पंद्रहवीं कक्षा। तो ये समझो अभी ये लोग जो बारह चौकड़ी पहनी है, अभी पाँच बजे हैं, अभी पाँच के ऊपर सात पौड़ी पढ़नी है, आगे भी बहुत है पढ़ाई; क्योंकि बाप कहते हैं- आगे चल करके मैं बहुत गुह्य बातें सुनाऊँगा। किसने बोला? आत्माओं के बाप शिव ने दादा लेखराज ब्रह्मा के मुख से बोला कि आगे चलकर मैं बहुत गुह्य बातें सुनाऊँगा। जैसे गीता में लिखा है- "गुह्यात् गुह्यतरं ज्ञानम्।" (गीता- 18/63) और दो साल के बाद, 18 जनवरी, 1969 को ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ दिया, तो फिर कैसे सुनाऊँगा? मैं बहुत गुह्य बातें सुनाऊँगा। सुनाऊँगा या सुनाऊँगी? (किसी ने कुछ कहा-...) क्योंकि भारत में ये मान्यता है कि भगवान पुरुष रूप में आते हैं; स्त्री रूप में नहीं आते हैं। स्त्री रूप में देवियाँ गाई हुई हैं; परंतु देवी-देवताओं को बनाने वाला कौन? वो तो भगवान ही है। तो भगवान स्वयं कहते हैं कि "मैं आगे चल करके बहुत गुह्य बातें बताऊँगा"; क्योंकि ज्ञान तो गुह्य ही होता है, ज्ञान बहुत गहरा होता है। तो गुलज़ार दादी के द्वारा जो सुनाया गया, वो धारणा की वाणी सुनाई गई। धारणा देवताओं में होती है। माना सतयुग के देवताओं में जो पहला पत्ता 16 कला सम्पूर्ण कृष्ण की आत्मा शूटिंग काल संगम में दादा लेखराज ब्रह्मा के रूप में है, सतयुग की फर्स्ट क्लास देव-आत्मा होने के कारण वो आत्मा गुलज़ार दादी के द्वारा ज्ञान की बातें नहीं सुनाती है, धारणा की बातें सुनाती है; परंतु बाबा कहते हैं- ''मैं तुम्हें बहुत गुह्य बातें सुनाऊँगा, गुह्य राज़ सुनाऊँगा, समझाऊँगा।'' ये भी क्लीयर किया कि सिर्फ़ सुनाऊँगा

नहीं, क्या करूँगा? ब्रह्मा के द्वारा सुनाया या गहराई से समझाया? सुनाया; समझाया तो नहीं। तो बताया, ब्रह्मा के द्वारा जो सुनाया है और जो तुमने सुना है, ब्रह्मा ने भी सुना और सुनाया भी, तो मैं आगे चल करके उसको गहराई/गुह्यता से समझाऊँगा, समझाने के लिए गुह्य-ते-गुह्य युक्तियाँ बताऊँगा।

05.11.66 की वाणी का तीसरा पेज, चौथी लाइन- तो दिन-प्रतिदिन समझाय तो रहे हैं ना! बाक़ी समझने वाला समझे तो समझे और समझने वाला नहीं होगा, जट बुद्धि होगा, जानवर बुद्धि होगा तो समझेगा ही नहीं। जो न समझे उनका तो पद भ्रष्ट होना ही है। सुनने के बाद क्या होता है? समझना। और जो समझ जाता है, वो दूसरों को समझाता भी है। तो जो समझेगा नहीं और दूसरों को समझाएगा नहीं, उनका पद भ्रष्ट हो जावेगा। माना? और भ्रष्ट पद होना ही है। क्यों? भ्रष्ट पद क्यों होना है? कारण। (किसी ने कहा- समझ के समझाया नहीं) हाँ! ये तो मन-बुद्धि से समझने की बातें हैं। ये जो ईश्वर का ज्ञान है, मन-बुद्धि से समझने का है। इसमें स्थूल इन्द्रियों का उतना पार्ट नहीं है, जितना बुद्धियोग का है। जो मन-बुद्धि से जास्ती अच्छी तरह समझेगा और दूसरों को समझाएगा, उनका पद तो ऊँचा होना ही है और पद भी तो, देखो वैराइटी पद होते हैं। एक तरह के पद होते हैं? भगवान आ करके जब राजयोग सिखाते हैं, तो ऊँचे-ते-ऊँचा पद क्या है? (किसी ने कहा- लक्ष्मी-नारायण) नहीं! डॉक्टर, डॉक्टर बनाता है; इंजीनियर, इंजीनियर बनाता है; तो भगवान आ करके ऊँच-ते-ऊँच भगवान-भगवती बनाते हैं। आज भी मंदिरों में सबसे जास्ती पूजा उनकी होती है। उनके सबसे जास्ती मंदिर यादगार बने हुए हैं। किनके? (किसी ने कहा-भगवान-भगवती के) भगवान-भगवती के! (किसी ने कहा- नारायणी-नारायण के) नारायण-नारायणी के! नारायण-नारायणी देवी-देवताएँ हैं या देवी-देवताओं से भी ऊँचा पद और भी कोई होता है? (किसी ने कहा- देवाधिदेव महादेव) शंकर की बात करते हैं? महादेव की बात करते हैं? (किसी ने कहा- लक्ष्मी-नारायण) शंकर और पार्वती जिनका नाम है, वो शंकर याद में बैठा हुआ है या नहीं बैठा है? (किसी ने कहा- बैठा हुआ है) तो पुरुषार्थी है या पुरुषार्थ पूरा हो चुका है? (किसी ने कहा- पुरुषार्थी है) ये तो नहीं कहेंगे कि पुरुषार्थ पूरा हो गया। किसी को याद कर रहा है, तो अपने से ऊँचे को ही याद कर रहा होगा ना! याद का जो सब्जेक्ट है, उस सब्जेक्ट में पास होने के लिए याद कर रहा है ना, प्रैक्टिस कर रहा है! तो देखो, उस याद की प्रैक्टिस में जो सबसे आगे जाता है, वो ही सबसे ऊँच पद पाता है। ऊँच पद क्या है? भगवान आकर क्या बनाते हैं? भगवान-भगवती बनाते हैं।

तो देखो, दैवी झाड़ कितना बनेगा! भगवान बनाते हैं पुरुषोत्तम संगम में अव्वल नम्बर नारायण-नारायणी, जिनका टाइटिल राधा-कृष्ण को मिलता है- नारायण दी फर्स्ट। जैसे अंग्रेज़ों में 'किंग एडवर्ड दी फर्स्ट, किंग एडवर्ड दी थर्ड, फोर्थ, फाइव' (हुए हैं)। ऐसे ही सतयुग में नारायण की आठ गद्दियाँ चली हैं। तो आठ पद हो गए ना! और फिर उन नारायणों को, जो सतयुग में नारायण हुए, जैसे अव्वल नंबर नारायण जो सतयुग का है, उसको जन्म देने वाली आत्मा सतयुग में सम्पन्न हुई या संगम में सम्पन्न हुई थी? (किसी ने कहा- संगम में) तो जन्म देने वाला ऊँचा हुआ या जन्म लेने वाले सतयुग के नारायण नम्बरवार ऊँचे हुए? (किसी ने कहा- संगमयुगी नारायण) तो देखो, वो ऊँचे-से-ऊँचा पद हो गया, जिनको शिव की अष्ट-मूर्तियाँ कहा जाता है; अष्टदेव के रूप में पूजे जाते हैं। कोई भी अनुष्ठान होता है, यज्ञोपवीत होता है, कथावार्ता होती है, विवाह वगैरह होता है, तो नौ ग्रह बनाए जाते हैं ना! (किसी ने कहा- बनाए जाते हैं) हाँ, उनकी पूजा ज़रूर करेंगे। उनमें एक है ऊँच-ते-ऊँच और बाकी आठ हैं नंबरवार।

तो देखो, उन आठ नारायणों को, जो सतयुग में जन्म लेंगे, उनके कोई तो जन्मदाता होंगे! होंगे या नहीं होंगे? (किसी ने कहा- होंगे) तो वो जन्मदाता ऊँचे हुए या जन्म लेने वाले नारायण ऊँचे हुए? (किसी ने कहा- जन्म देने वाले) इसलिए वो ऊँच-ते-ऊँच जन्मदाता, जिनको अष्टदेव के रूप में, नवग्रह के रूप में, शिव की अष्ट-मूर्तियों के रूप में, जो शिवशंकर भोलेनाथ के सर पर माला के आठ मणके दिखाए जाते हैं, वो ऊँच-ते-ऊँच पदधारी हैं। उसके बाद सतयुग के आठ नारायण, फिर उन नारायणों को सहयोग देने वाले राज्याधिकारी होंगे। नारायण अकेला तो राज्य नहीं करेगा, राज्याधिकारी तो होंगे। (किसी ने कहा- होंगे) तो देखो, वो नारायण से नीचे नारायणियाँ और उनसे नीचे राज्याधिकारी। राज्याधिकारियों से जो नीचे होते हैं, वो उनके परिवार में दास-दासियाँ होते हैं- कोई फर्स्टक्लास दास-दासी, कोई सेकिण्ड क्लास, कोई थर्ड क्लास, कोई फोर्थ क्लास। दास-दासियाँ तो होते हैं ना! फिर सबसे नीचा पद होता है चाण्डालों का। उनमें भी राजघराने के भी चाण्डाल होते हैं। प्रजा पद के भी चाण्डाल होंगे। प्रजा वर्ग में शरीर छोड़ेंगे, तो उनके शरीरों को, मुर्दे को ठिकाने लगाने वाले चाण्डाल होंगे। और चाण्डाल कौन बनते हैं? कोई हिसाब बताया कि नहीं? जो सबसे नीचा पद चाण्डाल का है, वो किनको मिलता है? जो दे करके वापस ले लेते हैं- चाहे तन की प्रॉपर्टी हो, चाहे धन

की प्रॉपर्टी हो, चाहे तन के बाल-बच्चे हों, तन के संबंधी हों, चाहे वस्तुएँ हों; जैसे- मकान आदि। ऐसे भी होता है ना! ईश्वरीय सेवा में आज मकान देते हैं और कल उस मकान में दखलंदाज़ी करने लग पड़ते हैं। इतना ही नहीं, वापस भी ले लेते हैं। सहज तरीके से वापस नहीं मिलता है तो मुहल्ले-पड़ोस में हुड़दंग पैदा करते हैं, भ्रष्टाचारी गवर्मेण्ट में झूठी शिकायतें लिखाते हैं और परेशान करके आख़रीन ले ही लेते हैं। तो क्या बनेंगे? चाण्डाल बनेंगे। अब वो चाहे सरेण्डर वर्ग में हों और चाहे न सरेण्डर होने वाले, घर-गृहस्थ में रह करके पुरुषार्थ करने वालों में हों। सरेण्डर हो करके जो वापस ले लेते हैं- तन हो या धन हो, तो वो क्या बनते हैं? (किसी ने कहा- चाण्डाल) चाण्डाल तो बनते हैं; लेकिन दो प्रकार के चाण्डाल बताए ना! भूल गए? राजघराने के चाण्डाल बनेंगे। लेकिन घर-गृहस्थ में रह करके वापस ले लिया, तन की सेवा करके दुनिया में चले गए, धन या मकानादि वापस ले करके दुनिया में चले गए, फिर डिससर्विस की, बाप का नाम बदनाम भी किया; क्योंकि जब बदनाम करेंगे तो किनकी सेवा करेंगे? प्रजा वर्ग के लोगों की सेवा करेंगे- ऐसे होता है, वैसे होता है, ये ज्ञान ये कहता है, वो कहता है। ज्ञान को तोड़-मरोड़ कर सुनाएँगे, डिससर्विस करेंगे, तो प्रजा वर्ग के चाण्डाल बन जाते हैं।

तो बताया, दैवी झाड़ सतयुग में देखो कितना बड़ा बनेगा, राजा-रानी, वो तो थोड़े होंगे। सतयुग में कितने राजाएँ होंगे? आठ ही राजाएँ हुए। नाम है, टाइटिल है उनका 'महाराजा'। त्रेता में ढेर राजाएँ होते हैं, 108 राजाएँ होंगे; बाक़ी उनकी प्रजा कितनी बनती है! एक-2 राजा की लाखों की तादाद में प्रजा बनती है, किस्म-2 की प्रजा कितनी बनती है! राज्य में जो बड़े-2 साहुकार होंगे, जिनको राजाओं की तरह घरों में ढेर-के-ढेर दास-दासियाँ होंगे, तो कैसे साहुकार हुए? फर्स्टक्लास। हैं तो प्रजा वर्ग में; लेकिन फर्स्टक्लास प्रजा वर्ग। तो ये राजाई स्थापन हो रही है- प्रदर्शनी में ये कोई की बुद्धि में थोड़े ही बैठता है। जब प्रदर्शनी चित्रों पर समझाते हैं तो कोई की बुद्धि में ये बातें गहराई से बैठती हैं कि कौन क्या बनेगा। भगवान जो नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं, उसमें कौन क्या बनेगा। वो प्रदर्शनी में भी ये बातें ज़रूर समझानी चाहिए कि ये जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म की राजधानी स्थापन हो रही है; राजधानी का मतलब 'राजा की धारणा शक्ति'। जैसे नारायण है, तो नारायण की धारणा शक्ति कौन? (किसी ने कहा- नारायणी) ऐसे ही हर एक राजा की जो भी धारणा शक्ति होगी, जो भी आत्मा धारणा शक्ति के आधार पर विशेष सहयोगी बनेगी, उसका नाम है- राज+धानी। ये स्थापन हो रही है पुरुषोत्तम संगम में। अभी 1966 की बात, सन् 1966 में जब ब्रह्मा बाबा जीवित थे- जड़ प्रदर्शनी में प्रजा वर्ग की आत्माओं की सेवा हो रही थी या राजाओं की सेवा हो रही थी? (किसी ने कहा- प्रजा वर्ग) ढेर-के-ढेर प्रदर्शनी में आते थे, मेले में आते थे; अभी भी ढेर-के-ढेर उन जड़ प्रदर्शनियों में/कॉन्फ्रेन्सिस में आते हैं। तो ढेर-के-ढेर जो आते हैं, वो प्रजा बनती है, राजा नहीं बनते हैं। उस समय की बात नहीं बताई। बताया, आदि सनातन देवी-देवता धर्म की राजधानी स्थापन हो रही है, ये समझाएँगे। जो सतयुग में थे, वो ही राजधानी शुरू होगी। तो कलियुग के अंत में क्या हैं? सतयुग के अंत में जो राजाएँ थे, जो आठवाँ नारायण हुआ, उसकी गद्दी कैसे पलट गई, जो त्रेता में राम का राज्य आ गया? क्या कारण हुआ? जो आठवाँ नारायण था उसने, राम के रूप में जन्म लेने वाला जो परिवार था, उस परिवार से, जो सतयुग के अंत में बहुत साहुकार बन गया था, उससे इतना लोन लिया कि उनकी सारी राजाई डूब गई। शूटिंग कहाँ होती है? (किसी ने कहा- संगम में) तो वो ही सतयुग के अंत के राजाएँ अभी कलियुग के अंत में आ करके राजाओं की गद्दी पर तो बैठते हैं; लेकिन विदेशों से कितना लोन ले रहे हैं। लोन ले रहे हैं या नहीं ले रहे हैं? (किसी ने कहा- ले रहे हैं) और प्रजा से भी खींच-2 कर धन इकट्ठा कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं? (किसी ने कहा- कर रहे हैं) तो प्रजा का भी लोन (चढ़) रहा है, विदेशों का भी लोन चढ़ रहा है। तो बताया, वो ही सतयुग के अंत के राजाएँ, जो कलियुग के अंत में देखो अब क्या हैं? सतयुग के आदि में इन ल०ना० का राज्य कहाँ से आया था? कहेंगे- पुरुषोत्तम संगमयुग से आया। संगमयुग में जो पुरुषार्थ किया, उसके बदले में सतयुग आदि में उन्होंने राज्य पाया। तो सतयुग के अंत में जो लास्ट नारायण हुआ, जिसने इतना लोन लिया, संगम में उसने क्या किया था? जो ज्ञान-धन पैदा करना चाहिए, मनन-चिंतन-मंथन करना चाहिए, वो तो नहीं किया; मनमत से बड़ी-2/मोटी-2 पुस्तकें छपा करके, आर्यसमाजियों की तरह ढेर सारा लिट्रेचर छपा करके ब्राह्मणों की दुनिया में मान-मर्तबा बहुत ले लिया। तो असली सेवा की या नकली सेवा की? नकली सेवा की, लोन बहुत चढ़ गया और उनके अण्डर में चलने वाली जो राम वाली आत्मा थी, उसने खूब मनन-चिंतन-मंथन करके ज्ञान अर्जन किया। ज्ञान कैसे बढ़ता है? मनन-चिंतन-मंथन करेंगे तो ज्ञान बढ़ेगा और मनन-चिंतन-मंथन उनका ही चलेगा जो दूसरों की खूब सेवा करेंगे। ईश्वरीय सेवा में ही बुद्धि लगी रहेगी, तो उनके अंदर ज्ञान टपकता ही रहेगा। क्यों? क्योंकि बाबा कहते हैं- जो बच्चे बहुत सेवाधारी होते हैं उनको मैं बहुत याद करता हूँ। ''सर्विसएबुल बच्चों को ही बाप याद करते हैं।'' (मु.25.1.68 पृ.3 अंत) तो जो सेवाधारी बच्चे हैं, बहुत ईश्वरीय

ज्ञान की सेवा करते हैं, उनको बाप याद करते हैं, तो उनकी याद बहुत तीखी हो जाती है और जिनकी याद बहुत तीखी होती है- आत्मा की भी याद, आत्मा के बाप की भी याद, तो उनकी बुद्धि सूक्ष्म बनेगी या भैंस बुद्धि/मोटी बुद्धि बनेगी? सूक्ष्म बुद्धि बनती है। जो सूक्ष्म बुद्धि होती है, वो मनन-चिंतन-मंथन में बहुत गहराई तक जाती है। इसलिए उन्होंने तो कमाई की, जो ब्राह्मणों की खास कमाई है। ब्राह्मणों का धंधा क्या? 'ज्ञान लेना और ज्ञान देना'। पहले ज्ञान-धन को अपना बनाना, जैसे गाय खाती है। फिर उसके बाद सारा दिन चबाती है, जुगाली करती है। यही बात तुलसीदास ने कही- ''तुलसीदास चंदन घिसैं, तिलक देत रघुवीर।'' बाबा ने बोला- अपने-2 शास्त्रों में अपनी-2 कथा-कहानियाँ लिख दी हैं। तो तुलसीदास ने रामायण में किसकी कथा-कहानी लिखी? राम की कथा लिखी। इसका मतलब राम वाली आत्मा कौन हुई? (किसी ने कहा- तुलसीदास) तो तुलसीदास चंदन घिसैं, जितना घिसेंगे, जितना दही को मंथन करेंगे, जितना दूध को मंथन करेंगे, उतना सार/मक्खन/घी निकलेगा।

तो ये नियम है। संगमयुग का नियम है कि तुलसीदास चंदन घिसैं, तिलक देत रघुवीर माने भगवान। 'रघु' माने सूर्य और सूर्यवंश का वीर। सदा डिटैच्ड सूर्य भगवान आते हैं तो पहले-2 किसको ज्ञान देते हैं? जिसको देते हैं वो मास्टर ज्ञान-सूर्य कहा जाता है। 'इमम् विवस्वते योगम् प्रोक्तवानहम् अव्ययम्।' (गीता श्लोक 4/1) तो वो बाप का टाइटलधारी सूर्य ही संसार में साकार भगवान साबित हो जाता है। कैसे साबित होता है? आत्माओं का बाप निराकार शिव, जो जन्म-मरण के चक्र से न्यारा होने के कारण त्रिकालदर्शी है, ज्ञान का अखूट भण्डार है, वो आ करके जो ज्ञान देते हैं, उस ज्ञान को जो आत्मा खूब मनन-चिंतन-मंथन करती है, तो उसका ज्ञान-धन अपना बन जाता है। जो मनन-चिंतन-मंथन नहीं करते, उसकी युक्ति नहीं अपनाते; ज़्यादा मनन-चिंतन-मंथन चले उसकी क्या युक्ति है? उसकी युक्ति है- दूसरों को खूब समझाते रहो, सुनाते रहो। ज़्यादा ईश्वरीय सेवा करेंगे, तो भगवान बाप उन बच्चों को बहुत याद करते हैं और भगवान बाप बुद्धियोग से जिनको याद करेंगे, तो उनका बुद्धियोग तीखा हो जाएगा।

तो बताया कि सतयुग के आदि में जो फर्स्ट लक्ष्मी-नारायण हैं, इनका राज्य कहाँ से आया? पुरुषोत्तम संगमयुग से आया। संगमयुग में इन्होंने क्या किया? खूब सेवा की या नहीं की? (किसी ने कहा- सेवा की) बहुत सेवा की तो उनको बहुत याद आता है।

तो बताया, तो भी तो समझाना पड़ता है ना! अभी ये बातें समझावे कौन! क्योंकि वो सतयुग का फर्स्ट नारायण बनने वाली आत्मा, वो तो ब्राह्मणों की दुनिया में दादा लेखराज ब्रह्मा थी, जो शरीर छोड़ गई। जो सबसे फर्स्टक्लास सुनाने वाली थी, वो तो चली गई। अब कौन समझावे? उन ब्रह्मा को जो फॉलो करने वाले हैं, वो तो ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा की चन्द्रवंशी प्रजा हो गए। वो उतना तो नहीं समझा सकेंगे। तो अभी कौन समझावे? जब तक कोई बहुत बड़ा अच्छा महारथी समझने और समझाने वाला न होगा, दूसरा कोई नहीं समझाय सकेंगे। कब तलक? ये बातें गहराई से ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद कौन समझाएगा? माना ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद कोई एक महारथी निकलेगा, जो इन बातों की गहराई को अच्छी तरह से, गुह्य-ते-गुह्य ज्ञान को समझाय सकेगा।

अभी इतने ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ समझाने के लिए जाते तो हैं। तो सभी हैं महारथी और कोई बस इस समय में इनको महारथी कोई को बोलते तो नहीं हैं। समझाने तो जाते हैं, वो समझते हैं- हम बड़े महारथी हैं। प्रदर्शनी/मेले/कॉन्फ्रेन्स में समझाते हैं, ढेर-के-ढेर समझने के लिए आते हैं। तो जो ढेर-के-ढेर समझने आते हैं, वो प्रजा आती है या राजा वर्ग की आत्माएँ आती हैं? प्रजा ढेर-की-ढेर होती है और राजाएँ तो बहुत थोड़े होते हैं। तो वो समझते हैं- हमने बहुत समझाया, हम बड़े महारथी हैं; लेकिन बाबा कहते हैं- इस समय में इन समझाने वालों को, जो प्रदर्शनी/मेले/कॉन्फ्रेन्स में जड़-प्रदर्शनी के चित्रों पर समझाते हैं, इनको कोई महारथी बोल नहीं सकते हैं; इस समय में घोड़ेसवार हैं। महारथी अभी बने कहाँ हैं! कब की वाणी है? 1966 की वाणी है। माने 1966 तक कोई भी दीदी, दादी, दादाएँ, कोई भी महारथी नहीं बने थे। महारथी तो आगे चल करके बनने का है। अभी वो समय आने वाला है। अभी तो घोड़ेसवार और प्यादे हैं। जो सेना तैयार होती है ना! तो जो बड़े-2, ऊँचे पद वाले राजाएँ होते हैं, वो हाथियों पर मसन्दा कसके बैठते हैं; उनसे जो छोटे होते हैं, घोड़े/ऊँट पर सवार होते हैं और उनसे जो छोटे होते हैं, वो पैदल भागते हैं। तो घोड़ेसवार और पैदल प्यादे हैं।

सो भी घोड़ेसवार भी नम्बरवार हैं; एक जैसे नहीं हैं। महारथी भी किसको भी नहीं कहा जाए माने महारथी तो कोई हैं ही नहीं। महारथी कहा जाए जब, जबकि फिर ये राजाएँ वगैरह भविष्य में आएँगे ना! कौन-से राजाएँ पहले आएँगे? अरे! अभी हम उल्टी सीढ़ी चढ़ रहे हैं या ऊपर से नीचे उतर रहे हैं? (किसी ने कहा- चढ़ रहे हैं) ब्रॉड ड्रामा 5000 वर्ष में ऊपर से नीचे उतरते हैं और अभी संगमयुग में जब भगवान आते हैं, तो हम 84 जन्मों की जो 5000 वर्ष की सीढ़ी है, वो उल्टी सीढ़ी चढ़ रहे हैं। तो जो अंतिम जन्म की, 84वें जन्म की सीढ़ी है, उसमें राजाएँ और प्रजा हैं या नहीं हैं? (किसी ने कहा- हैं) तो 1966 की बात बताई कि 1966 में तो जड़ प्रदर्शनी में हुजूम-के-हुजूम की प्रजा की सर्विस करते थे; जो प्रजा को कण्ट्रोल करने वाले 108 थोड़े-से राजाएँ हैं, उनकी तो सेवा नहीं करते थे। बताया कि आगे चल करके ऐसे भी निकलेंगे, जो अंतिम 83/84 जन्म में जो राजाएँ हैं, उनकी सेवा करके उनको निकालेंगे। तो अभी कोई निकले? अरे! कोई एम.पी., एम.एल.ए. निकलते हैं? अभी तो कोई नहीं निकले। तो फिर ये राजाएँ वगैरह आएँगे ना! जो राजाई की, कण्ट्रोलिंग की गद्दी पर बैठने वाले हैं, वो भी नम्बरवार आएँगे। पहले आखिरी कलियुगी जन्म के आएँगे कि ऊपर सतयुग की सीढ़ियों के आएँगे? आखिरी जन्म के आएँगे। वो उस समय में मालूम पड़ेगा कि कौन महारथी हैं, जो इन राजाइयों की गद्दी पर बैठने वाले एम.एल.ए., एम.पी. आदि को निकालने वाले हैं, कैसे किसको पकड़ते हैं। उनको पकड़ने की कोई युक्ति होगी ना! पहले जो अंतिम जन्म के नीचे स्तर के राजाएँ हैं, वो समझेंगे या एकदम ऊँचे स्तर के समझ जाएँगे? नीची स्तर के समझेंगे। अभी तो क्या, अभी तो कहाँ है वो बात, जो भविष्य में होनी है? वो कहाँ हैं? जैसे कि बस ब्रह्माकुमारी-ब्रह्माकुमार हैं। टाइटिल रख लिया है। ये जानते ही नहीं कि हम 'ब्रह्' माने बड़ी, 'माँ' माने माँ, बड़ी अम्मा के कुमार-कुमारी तो हैं; लेकिन हमारा बड़ा बाप भी कोई है। अभी तो बस ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं। अरे, ब्रह्माकुमारी क्या कहते हो? ब्रह्माकुमारी भी तो तब से बनी, जब सन् 1947 से ब्रह्मा हुआ; कि पहले ब्रह्माकुमार-कुमारी थे? और उस ब्रह्मा के द्वारा आत्माओं के बाप परमपिता परमात्मा शिव ने जो ज्ञान सुनाया, उस ज्ञान को जो सुनने वाले थे, वो हुए असली मुखवंशावली ब्रह्माकुमार-कुमारी, जो मुख से भगवान-सुप्रीम टीचर की सुनाई हुई वाणी को अभी भी ध्यान देते हैं। मुरली से प्यार तो मुरलीधर से प्यार। ''मुरली से प्यार अर्थात् मुरलीधर से प्यार।'' (अ.वा.18.1.07 पृ.5 मध्य) लेकिन दूसरे नम्बर के भी हैं, जो ब्रह्मा के मुख से सुनाई हुई वाणी के ऊपर ध्यान नहीं देते, भगवान की वाणी को ध्यान से नहीं सुनते; लेकिन बस ब्रह्मा की गोद याद करते रहते हैं। अहंकार रहता है- ''अरे, हमने ब्रह्मा बाबा की गोद ली है। तुम कल के बच्चे निकले हो, तुम क्या जानो- क्या ब्रह्माकुमार-कुमारी होते हैं!'' ऐसे बड़े अहंकार से बोलते हैं। अरे! मुख ऊँचा होता है या गोद ऊँची होती है? गोद तो नीची और मुख ऊँचा होता है। निराकार शिव भगवान ज्ञान सुनाने के लिए मुख का आधार लेते हैं या गोद का आधार लेते हैं? (सभी ने कहा- मुख का आधार) गोद में से ज्ञान नहीं सुनाया जाता। तो देखो, जो मुखवंशावली ब्राह्मण हैं, वो बाप को जानने वाले हैं और जो कुखवंशावली हैं; छोटे-2 दूधमुँहे बच्चे होते हैं ना, वो अम्मा की गोद को ही ज़्यादा पहचानते हैं कि बाप को भी जानते हैं? (किसी ने कहा- अम्मा की गोद को)

तो बस, ये जो ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं, जैसे कि बस ब्रह्माकुमार-कुमारी। अरे! ब्रह्माकुमारी क्या?- मुरली में बोला। समझना चाहिए ना! हम सिर्फ अम्मा के बच्चे हैं या अम्मा-बाप दोनों के बच्चे हैं? (किसी ने कहा- अम्मा-बाप दोनों के बच्चे हैं) तो बाप को भी तो जानना चाहिए ना! बाप को तो बिचारे जानते ही नहीं। अरे! ब्रह्मा, बाप को जानता था? ब्रह्मा ने ही बाप को नहीं जाना, तो ब्रह्माकुमार-कुमारी जो अपन को कहलाते हैं, वो कहाँ से जानेंगे! बोला- तुमको तो मिलता है, बाप को याद करो। तुमको क्या मिलता है? (किसी ने कहा- बाप) तो किसको याद करो? (किसी ने कहा- बाप) और जिनको बाप मिलता ही नहीं, ब्रह्माकुमारी विद्यालय में ज्ञान तो लेते हैं; लेकिन ब्रह्माकुमारी मिलती है, तो याद किसको करेंगे? ब्रह्माकुमारी याद आती है। ब्रह्माकुमारी-2 को क्यों याद कर रहे हो? अरे! ब्रह्माकुमारी से भी ऊँच तो ब्रह्मा है ना! और ब्रह्मा माने बड़ी अम्मा, बड़ी अम्मा से भी तो कोई बड़ा है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) कोई बड़ा बाप है कि नहीं? (किसी ने कहा- है) तो ब्रह्माकुमारी तुमको कहती है- अपन को आत्मा समझ परमात्मा को याद करो। तुम सभी ब्रह्माकुमारी पिछाड़ी क्यों मरते हो? जो भी आने वाले जिज्ञासु हैं, उनको समझाओ- तुम ब्रह्माकुमारी के पिछाड़ी क्यों मरते हो? वो जो इशारा कर दें- धन दो, तो धन दे देते हो; मकान दो, तो मकान दे देते हो; सब-कुछ अर्पण करते हो, बाल-बच्चों की भी परवरिश की परवाह नहीं करते हो। ब्रह्माकुमारी तो बताती है कि तुम अपन को आत्मा समझो, परमात्मा को याद करो; लेकिन ब्रह्माकुमारी ये बात बताती है कि आत्माओं के बीच परम पार्टधारी परमात्मा कौन है, जिस परमात्मा का नाम परमपिता के बाद लिया जाता है? परमपिता परमात्मा कहा जाता है या परमात्मा परमपिता कहा जाता है? परमपिता पहले और परमात्मा बाद में। इसका मतलब हुआ कि आत्माओं के बीच में कोई परम पार्टधारी/हीरो पार्टधारी आत्मा है

जो 'परमात्मा' कही जाती है। गीता (श्लोक 15/16) में भी कहा है- तीन प्रकार की आत्माएँ बताई हैं- क्षर और अक्षर। 'क्षर' माने क्षरित/पतित होने वाली। वो तो सभी मनुष्य-आत्माएँ हैं। एक अक्षर है, निराकार शिव ज्योतिबिंदु जो कभी क्षरित नहीं होता; लेकिन क्षरित होने वाली आत्माओं के बीच उसकी तुलना नहीं की जा सकती, वो आत्माओं का बाप है। क्यों? क्योंकि वो आत्माओं का बाप तो शरीर से जन्म लेता ही नहीं। वो टैली करने वाली बात तो उस आत्मा से है, जो जन्म-मरण के चक्र में आती है। आत्माओं के बीच कैसी आत्मा? जो जन्म-मरण के चक्र में दूसरी आत्माओं की तरह आती है; लेकिन परम पार्टधारी है। वो चारों युगों के चारों सीन में हीरो पार्टधारी है; कभी नीचा पार्ट बजाने वाली नहीं है। वो है परमात्मा, जिसको गीता में भी बोला है- ''परमात्मा इति उदाहृतः।'' (गीता-15/17)- क्षर कही जाने वाली आत्माओं में भी एक तीसरी आत्मा और है, जो 'परमात्मा' नाम से कही जाती है। दुनिया में भी कहते हैं- ''आत्मा सो परमात्मा''। ज़रूर कोई आत्मा है, जो पुरुषार्थ करके परम पार्टधारी आत्मा-परमात्मा बन जाती है। पहले नहीं थी, फिर शिव बाप ने आकर जो याद की युक्ति बताई, वो याद करते-2 आत्माओं के बाप-परमपिता शिव के समान बन जाती है। उसी शंकर का नाम शिव के साथ जोड़ा जाता है; और किसी भी आत्मा का नाम शिव के साथ नहीं जोड़ा जाता।

तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियों के पिछाड़ी क्यों मरते हो? अरे! ये ब्रह्माकुमारी हमको दूसरी चाहिए, ये ब्रह्माकुमारी हमको नहीं चाहिए, जो सिर्फ़ अम्मा को चाहती है, अम्मा-2 करती रहती है, अम्मा की गोद याद करती रहती है। कौन-सी ब्रह्माकुमारी चाहिए? दूसरी। दूसरी वो ब्रह्माकुमारी चाहिए, जो बाप को भी जानती हो। सिर्फ अम्मा को जानने वाली ब्रह्माकुमारी चाहिए कि अम्मा-बाप दोनों को जानने वाली चाहिए? (किसी ने कहा- दोनों को जानने वाली चाहिए) दूसरी ब्रह्माकुमारी चाहिए। अरे! ये चाहिए, वो चाहिए। ब्रह्माकुमारी क्या करेगी? अरे! बाप को जानने वाली हो, चाहे अम्मा को जानने वाली हो, चाहे अम्मा-बाप दोनों को जानने वाली हो, तुमको तो बस ये मंत्र देता है- मामेकम् याद करो। अरे! ब्रह्माकुमारियाँ तो बहुत हैं, चाहे अम्मा को जानने वाली हों, चाहे अम्मा-बाप दोनों को जानने वाली हों, वो तो बहुत हैं; लेकिन तुम्हें मंत्र कौन-सा मिलता है? (किसी ने कहा- मामेकम् याद करो) 'एक शिवबाबा, दूसरा न कोई'। तो कोई ब्रह्माकुमारी को शिवबाबा कहेंगे? ब्रह्माकुमारी गुलज़ार दादी को कोई शिवबाबा कहता है? नहीं। ये तो पहले एक मंत्र अच्छी तरह से पक्का कर लो- मन्मना भव, मेरे मन में समा जा। क्या ब्रह्माकुमारी कहती है- मेरे मन में समा जा? (किसी ने कहा- नहीं) ब्रह्माकुमारी थोड़े ही कहती है।

ये कहती हैं कि बाप को याद करो और ये 84 जन्म को याद करो, बस! ब्रह्माकुमारी क्या कहती हैं और! ये भी जो आते हैं सेण्टर्स में। देखो, कितने-2 दिन से कितने-2 सेण्टर हैं, जो ये पाई-पैसे की बात सुनती हैं ना! क्या पाई-पैसे की बात? मामेकम् याद करो, मन्मना भव। ये भी किसको सुनाए भी नहीं सकते हैं। सुनाए और वो पूछे- मामेकम् याद करो, तो किस एक को याद करें? कहाँ है वो? बताओ। तो कहेंगी- ब्रह्मा के तन में आया था। अरे! ब्रह्मा कहाँ है? शरीर छोड़ गया। अब किसको याद करें? वो भूत-प्रेतों की तरह गुलज़ार दादी में प्रवेश करता है, उसको याद करो। अरे! गीता में तो लिखा है- भूत-प्रेतों को याद करेंगे, तो भूत-प्रेतों से प्राप्ति करेंगे; देवी-देवताओं को याद करेंगे, तो देवी-देवता बनेंगे और मेरे को पहचान करके याद करेंगे, तो मेरे से प्राप्ति करेंगे। (गीता-9/25) तो ऊँची प्राप्ति किससे होगी- भूत-प्रेतों से, देवात्माओं से या देवात्माओं को देवात्मा बनाने वाले से? (किसी ने कहा- देवात्मा बनाने वाले से) भगवान से ऊँची प्राप्ति होती है।

वो कहती हैं- बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाएँगे। है तो ये अभी बहुत सहज बात, बिल्कुल सहज। अभी ये तो आपे ही करना चाहिए। मन्मना भव, मामेकम् याद करो, एक शिवबाबा दूसरा न कोई- ये तो ऑटोमैटिक आपे ही याद करना चाहिए। उठते-बैठते, घर में चलते-फिरते ये तुमको मंत्र मिल गया है- मन्मना भव। ये ब्रह्माकुमारी तुमको क्या करेगी? बस, ब्रह्माकुमारी नहीं है, ये है तो ब्रह्माकुमारी; लेकिन ये बात पढ़ाती नहीं है। क्या बात? मन्मना भव, मेरे मन में समा जा- ये कौन कहता है? गुलज़ार दादी कहती है? समझाती है इस बात को? (किसी ने कहा- नहीं) मन्मना भव- मत्+मना+भव; 'मत्' माने मेरे, 'मना' माने मन में, 'भव' माने समा जा। मेरे मन में समा जा- ये गुलज़ार दादी कहती है? (किसी ने कहा- नहीं) अच्छा! गुलज़ार दादी में प्रवेश करने वाली जो सूक्ष्म शरीरधारी ब्रह्मा की आत्मा है, वो कहती है- मेरे मन में समा जा? अगर वो कहे कि मेरे मन में समा जा, तो सबको भूत-प्रेत बनना पड़ेगा। जैसे को याद करेंगे, वैसा ही बन जाएँगे और ब्रह्माकुमार-कुमारी बन भी रहे हैं। जैसे ब्रह्मा ने अकाले मौत में शरीर छोड़ा, वैसे ब्रह्माकुमार-कुमारी अकाले मौत में मर रहे हैं कि नहीं मर रहे हैं? (किसी ने कहा- मर रहे हैं) चाहे

जगदीश भाई हों, रमेश भाई हों, चाहे कुमारका दादी हों, कोई भी महारथी हों, अचानक मौत मर रहे हैं या नहीं मर रहे हैं? जो अचानक मौत मरते हैं, जैसे ब्रह्मा का हार्ट फेल हुआ, अचानक मौत हो गई, तो मुरली में बाबा बोलते हैं कि योगी का हार्ट फेल नहीं हो सकता। ''याद से ही आयु बड़ी होनी है। ..... पुरुषार्थ करना है निडर हो रहने का। शरीर आदि का कोई भी भान न आवे। उसी अवस्था में जाना है। ..... यह रिहर्सल तीखी करनी पड़े। प्रैक्टिस न होंगी तो खड़े हो जावेंगे। टांगें धिरकने लग पड़ेंगी। और हार्टफेल अचानक होता रहेगा। ..... योग वाले ही निडर रहेंगे। योग से शक्ति मिलती है।'' (रात्रि मु.ता.15.6.69) ''योगी की आयु हमेशा बड़ी होती है। भोगी की कम।'' (मु.ता.31.8.69 पृ.3 आदि) तो योगी हुआ या भोगी हुआ? (किसी ने कहा- भोगी हुआ) भोगी को याद करेंगे तो हम क्या बनेंगे? भोगी ही बनेंगे। फलानी ने, अरे पढ़ाया ना तुमको! एक अक्षर पढ़ाया- मन्मना भव! है काफ़ी बिल्कुल। बस, ये याद करो अच्छी तरह से- मन्मना भव। अब इसे रटें कि याद करें? (किसी ने कहा- याद करें) कैसे याद करें? मेरे मन में समा जा। कौन कह रहा है? बुद्धि में तो आएगा कि ये कौन कह रहा है- मेरे मन में समा जा? वो आत्माओं का बाप शिव, वो कहता है- मेरे मन में समा जा? (किसी ने कहा- नहीं) क्यों? वो क्यों नहीं कहता? उसको मन है ही नहीं। मनुष्यों को चंचल मन होता है, ग्यारहवीं इन्द्रिय बड़ी प्रबल होती है। भगवान तो मनुष्यों को देवता बनाने वाला है। उन देवताओं का भी मन चंचल नहीं होता है, वो भी एकाग्र रहते हैं- ''मैं आत्मा हूँ''। तो जब उन्हें कहा- बनाने वाले भगवान की रचना हैं, उन रचना देवताओं का ही मन चंचल नहीं होता, तो भगवान कैसे चंचल मन वाला होगा! उसको मन हो सकता है? वो अमन है कि मन वाला है? वो तो अमन है। तो बताओ, फिर कौन है? कौन कहता है- मेरे मन में समा जा? (किसी ने कहा- परमपिता परमात्मा) परमपिता, पिताओं का भी पिता, वो तो शिव है, शंकर का भी पिता है, उसका कोई पिता नहीं। तो परमपिता कहता है? (किसी ने कहा- शिवबाबा) ब्रह्माकुमारियाँ 32 किरणों वाला शिवलिंग का चित्र रखती हैं, वो शिवबाबा नहीं है? (किसी ने कहा- है) अरे! शिवबाबा, जिसे हम 'बाबा' कहते हैं, वो साकार-निराकार का मेल है या सिर्फ़ निराकार है? (किसी ने कहा- निराकार है) सिर्फ़ निराकार है, साकार का मेल नहीं है? शिवबाबा उसे कहा जाता है, जो साकार और निराकार का मेल हो। ''अशरीरी और शरीरधारी का मिलन है। उनको तुम कहते हो 'बाबा'।'' (मु.29.3.68 पृ.1 मध्य) बाबा कहा ही जाता है 'ग्राण्ड फादर' को। शिव तो आत्माओं का सिर्फ़ बाप है। बिंदी-2 आत्माएँ भाई-2 और वो उनका बाप, दूसरा कोई संबंध बनता ही नहीं। दूसरा सम्बन्ध तब बनता है, जब इस साकार सृष्टि में किसी में मुकर्रर प्रवेश करता है, तब ढेर-के-ढेर संबंध बन जाते हैं, सर्व सम्बन्ध बन जाते हैं। जो गाते हैं- ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव। त्वमेव सर्वम् (अर्थात् सब प्रकार के सम्बन्ध तुम से ही हैं) मम देव-देव।'' तो देखो, साकार के द्वारा ही वो निराकार अनेक प्रकार की इन्द्रियों के साथ सम्बन्ध जोड़ता है; बिना शरीर के कोई सम्बन्ध बनता ही नहीं। बिना शरीर के सिर्फ़ एक ही सम्बन्ध बनता है- हम बिन्दु-2 आत्माएँ और हमारा बिन्दु-2 आत्माओं का वो बाप 'शिव', जिसकी बिन्दी का ही नाम 'शिव' है। ''उनकी (शिव) आत्मा का ही नाम 'शिव' है। वह कब बदलता नहीं। शरीर बदलते हैं तो नाम भी बदल जाते हैं।'' (मु॰21.1.70 पृ॰2 आदि) वो हमारा सुप्रीम बाप और हम उसके बच्चे; दूसरा कोई सम्बन्ध नहीं। तो कब उस निराकार का अनेक प्रकार का सम्बन्ध बनता है? जब साकार शरीर में आता है।

तो बोला- ये अच्छी तरह से याद करो, एक अक्षर 'मन्मना भव' का मतलब क्या हुआ? अच्छी तरह से ये नहीं- मन्मनाभव-3, जैसे मुसलमान चिल्लाते हैं- ''अल्लाह हो अकबर''। उस चिल्लाने का नाम 'नमाज़', 'अज़ान' रख दिया है। क्या नाम रख दिया? मुल्लाजी ने अज़ान लगाई। 'ज़ान' को ही जानकारी कहा जाता है। अज़ान माने 'अज्ञान'। किस बात का ज्ञान नहीं है? जो ऊँच-ते-ऊँचा अल्लाह है, वो इतने ऊँचे धाम में, अर्श में रहता है; फ़र्श में नहीं रहता है कि वहाँ तक हमारी आवाज़ पहुँच ही नहीं सकती। वहाँ तक आवाज़ पहुँच ही नहीं सकती- ये बात जानते ही नहीं हैं, तो ज़ोर से चिल्लाते हैं- ''अल्लाऽऽऽह हो अकबर''। तो अज्ञानी/अज़ान हैं कि जानकार हैं? अज्ञानी हुए। तो तुमको तो ऐसा नहीं करना है। तुमको अच्छी तरह से जान करके याद करना है। किसको अच्छी तरह से जान करके? (किसी ने कहा- बाप को) जिसके लिए मन्मना भव कहा गया, उसको अच्छी तरह से जानना है कि किसके मन में समा जाएँ। कौन है जो कहता है- मेरे मन में समा जा? और झाड़ के चित्र में वो बैठा हुआ दिखाया भी है, जहाँ विनाश काल में जब सारी मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ में आग लगती है, तो सब आत्माएँ अपना-2 शरीर छोड़ करके उसी की तरफ़ दौड़ रही हैं। झाड़ के चित्र में देखा, कौन बैठा है? (किसी ने कहा- शंकर जी) कहाँ बैठा है? झाड़ के ऊपर बैठा हुआ है। सारी आत्माएँ खिंची हुई उसी में समा जा रही हैं, जो गीता में लिखा है-"मया अव्यक्तमूर्तिना" (गीता 9/4)- मेरी अव्यक्त मूर्ति के द्वारा सारा संसार जन्म लेता है और मुझ अव्यक्त मूर्ति में ही कल्पांत में समा जाता है। जिसको विद्वान-पंडित-आचार्यों ने

कह दिया है- हम सब आत्माएँ सागर के बलबूले/बुदबुदे हैं, सागर में से उठते हैं और सागर में समा जाते हैं। तो हम आत्माएँ क्या हुईं? ज्ञान-सागर के बुदबुदे हो गए। उसी में से निकले और कल्पांत में उसी में समा जाते हैं। तो विद्वान-पंडित-आचार्यों ने शास्त्रों में ये जो बात कही, खास करके शंकराचार्य ने, ये झूठी कही या सच्ची कही? (किसी ने कहा- झूठी कही) हम सब ज्ञान-सागर के बुदबुदे नहीं हैं? बुदबुदे ही तो हैं। अपने-2 मन में अलग-2 संकल्प बुदबुदाय रहे हैं कि सबके मन में एक ही संकल्प चल रहा है? (किसी ने कहा- अलग-2) सबके अंदर एक बुदबुदा नहीं चल रहा है- कोई का छोटा बुदबुदा, कोई का बड़ा बुदबुदा; कोई कैसा, कोई कैसा। अंदर-2 संकल्प चलते हैं कि नहीं? (किसी ने कहा- चलते हैं) तो जैसे बुदबुदे हो गए, अंदर-2 बुदबुदाते रहते हैं- कोई कुछ सोचता है तो कोई कुछ सोचता है। क्या सब एक ही बात सोचते हैं? 500-700 करोड़ मनुष्य हैं, सबके अंदर अलग-2 बुदबुदाहट हो रही है। हो रही है या नहीं? (सभी ने कहा- हो रही है) तो अलग-2 बुदबुदे हुए ना! वो बुदबुदे, अंत में क्या होगा? सबके 'तुण्डे-2 मतिर्भिन्ना' रूपी संकल्प किसमें समा जाएँगे? एक के संकल्प में समा जाएँगे। उस एक के संकल्प में क्या है? निःसंकल्प, एक ज्योतिबिन्दु शिव। किसके समान बन गया? शिव समान बन गया। तो जो बन गया वो साकार भी है माना मूर्ति भी है और अव्यक्त भी है माना वो देखने में नहीं आता। कैसे देखने में नहीं आता है? वो जिस अवस्था में रहता है, ऊँचे-से-ऊँची स्टेज में रहता है, तो उस याद की स्टेज में उसके अंदर इन्द्रियों की स्मृति नहीं है, देह की स्मृति नहीं है; इसलिए वो लिंग मूर्ति तो है, बड़ा रूप तो है; लेकिन न हाथ हैं, न पाँव हैं, न नाक है, न कान हैं, कोई भी ज्ञान-इन्द्रिय/कर्मेन्द्रिय नहीं है। तो मूर्ति तो है; लेकिन बुद्धि द्वारा देह और देह की इन्द्रियों से अव्यक्त है। वो दस इन्द्रियाँ उसे दिखाई नहीं देतीं, वो शरीर दिखाई नहीं देता। वो उसके आत्मिक स्मृति के पुरुषार्थ की सम्पन्न स्टेज है और उससे पूर्व अधूरी स्टेज शंकर है। जो शंकर है उसकी हाथ-पाँव वाली मूर्ति दिखाते हैं ना? (किसी ने कहा- दिखाते हैं) तो वो याद में बैठी हुई है। किसकी याद कर रही है? (किसी ने कहा- शिव की) अपने बाप की याद कर रही है। तो बाप बड़ा या वो बच्चा बड़ा? (किसी ने कहा- बाप बड़ा) तो देखो, बताया- ये बात अच्छी तरह से याद करो- मन्मना भव। महामंत्र है। अच्छी तरह से याद करने का क्या मतलब हुआ? बिना सोचे-समझे याद करो? किसको याद करें? (किसी ने कहा-साकार में निराकार को) हाँ, कोई इस मनुष्य-सृष्टि का हीरो पार्टधारी सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ करने वाला साकार है। उसको, ब्रह्मा के मुख से जो वाणी निकली है, उस वाणी के आधार पर समझो कि वो कौन है? जिसके लिए मुरली में बार-2 बोला गया कि बाप का परिचय दो। बाप से क्या मिलता है? (किसी ने कहा- वर्सा) कौन-सा? बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलेगा। बेहद का वर्सा क्या है? हद के बाप हद का वर्सा देते हैं- ज़मीन-जायदाद/कारखानों/धन-सम्पत्ति/मल्टी मंज़िलों वाले मकानों का वर्सा देंगे। हद का वर्सा हुआ ना! और बेहद का बाप बेहद का वर्सा देता है, जन्म-जन्मांतर की सुख-शांति का वर्सा देता है, मुक्ति और जीवन्मुक्ति का वर्सा देता है, जो वर्सा दुनिया में कोई भी दे नहीं सकता; और देने वाले के पास खुद होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए? (किसी ने कहा- होना चाहिए) वो शिव ज्योतिबिन्दु आत्माओं का बाप, वो स्वर्ग में जीवन्मुक्ति लेता है? (किसी ने कहा- नहीं लेता) उसके पास जीवन्मुक्ति होती है? वो तो जीवन्मुक्ति भोगता ही नहीं। वो तो जीवन में आता ही नहीं। जन्म-मरण के चक्र में आता है? नहीं आता। तो जो आता ही नहीं, उससे जीवन्मुक्ति का वर्सा कैसे मिलेगा! बाप से कुछ मिलता है या नहीं मिलता है? बाप से मिलता है। अब कोई कहे- उससे हमें जीवन्मुक्ति का वर्सा नहीं मिलता है, तो फिर वो आत्माओं का बाप फालतू में आया! वो भी तो आत्माओं का बाप है। अरे, आत्माओं का बाप है या नहीं? (किसी ने कहा- है) तो बाप तो वर्सा देता है या नहीं देता है? ऐसे ही बाप बन गया! तो क्या देता है? (किसी ने कहा- स्वर्ग का वर्सा) वो खुद स्वर्ग में जाता है? जो बाप मकान का वर्सा देगा, वो मकान बनाएगा या नहीं बनाएगा? और मकान में जाएगा या नहीं जाएगा? (किसी ने कहा- जाएगा) धनवान बाप होगा तो धन का वर्सा देगा या नहीं देगा? (किसी ने कहा- देगा) धन कमाएगा कि नहीं कमाएगा? और वो कैसा बाप है? वो ज्ञान-धन कमाता है क्या? अरे, वो तो सदा ही ज्ञान का भण्डार है। उसे कमाने की ज़रूरत है? (किसी ने कहा- नहीं) तो वो क्या देता है? (किसी ने कहा- सुख-शांति) अरे, वो सुख में खुद रहता है जो तुम्हें देगा? अरे, जो बाप होता है, वो धनवान बाप होगा, खुद के पास धन होगा तो बच्चों को धन देगा ना! खुद के पास कल-कारखाने होंगे तो बच्चों को कल-कारखानों का वर्सा देगा ना! खुद राजा होगा तो बच्चे को राजाई का वर्सा देगा ना! वो शिव बाप राजा बनता है? (किसी ने कहा-नहीं, वो ज्ञान-धन देता है।) तो वो ज्ञान-धन देता है। ज्ञान-धन तो देता है ना! जो ज्ञान-धन देता है, वो ज्ञान-धन खूटने वाला है या अखूट ज्ञान-धन देता है? अखूट ज्ञान-धन देता है। लेने वाला लें या न लें। ऐसा अखूट ज्ञान-धन देता है जो मुरली में बोला है कि कोई-2 बच्चे तो 82/83 जन्म भी सुख में रहते हैं। ''बाप समझाते हैं 3/4 से भी जास्ती तुम सुख भोगते हो।'' (मु.ता.3.6.69 पृ.2 मध्य) तो बताओ, वो 82/83 जन्म किस आधार पर सुख में रहते हैं? वो आधार क्या है?

(किसी ने कहा- ज्ञान को धारण किया) हाँ, ज़रूर उन्होंने जो अखूट ज्ञान-धन देने वाला शिव है, जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है, त्रिकालदर्शी है, उससे वो अखूट ज्ञान-धन लिया है जो अंतिम जन्म तक भी खूटता ही नहीं है। तो सबसे ऊँचा धन देने वाला कौन हुआ? देखो, गीता में भी कहा है- ''न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।'' (गीता 4/38)- इस दुनिया में ज्ञान के समान और कुछ भी पवित्र चीज़ नहीं है। सच्चाई का ज्ञान या झूठ का ज्ञान? (किसी ने कहा-सच्चाई का ज्ञान) उसके सिवाय इस दुनिया में कोई भी चीज़ पवित्र नहीं है। लक्ष्मी भी उस ज्ञान-धन के मुकाबले पवित्र नहीं है, उसको भी वो ज्ञान-धन लेना पड़ेगा। लक्ष्मी धन किससे लेती होगी? (किसी ने कहा-नारायण से) 'नार' माने ज्ञान-जल, 'अयन' माने घर; जो सदैव ज्ञान-जल में ही रहने वाला है। विष्णु को कहाँ दिखाते हैं? क्षीर-सागर में दिखाते हैं। कहाँ का रहने वाला है? क्षीर-सागर में रहने वाला है। तो वो क्षीर-सागर में रहने वाला, वो ही गीता का परमपद है- परमात्मा। उस परम पदधारी ने परमपद कैसे पाया? (किसी ने कहा- ज्ञान-धन से) उस ज्ञान-धन को अपना बनाया या नहीं बनाया? (किसी ने कहा- बनाया) कैसे बनाया? औरों ने वो ज्ञान-धन अपना क्यों नहीं बनाया? जो एक नर से डायरैक्ट नारायण बनता है, उसी ने कैसे ज्ञान-धन को अपना बनाया? क्या तरीका? (किसी ने कहा- वो सदैव याद में रहता है) अरे, याद तो तब आएगा जब उसको ज्ञान से जानेंगे/पहचानेंगे? हे भगवान! याद करने के लिए पहले ज्ञान है, पहचान है कि बिना ज्ञान/पहचान के याद आ जाता है? (किसी ने कहा-पहचान) याद तो ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ भी करते हैं; लेकिन क्या बाप को पहचाना? (किसी ने कहा- नहीं पहचाना) जो नई दुनिया, नई राजधानी स्थापन करने वाला है, जो अव्यक्त वाणी में भी बोला- दिल्ली में बाप राजधानी स्थापन कर रहे हैं। ''हमारी राजधानी यही दिल्ली बने।'' (अ.वा.15.11.16 पृ.2 मध्यादि) पिछले साल बोला। ब्रह्माकुमारियाँ अव्यक्त बापदादा का मुँह बंद करती हैं- अरे बाबा, आप माउण्ट आबू में बैठे हैं, आप दिल्ली का बखान क्यों कर रहे हैं? तो मुँह अज्ञान के आधार पर बंद कर रही हैं या ज्ञान को समझा? अज्ञान के आधार पर बंद कर रही हैं। जब बाबा ने देखा कि हमारा ही मुँह बंद कर रही हैं, तो वो पार्ट फिर बंद होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? (किसी ने कहा-होना चाहिए) वो पार्ट ही नहीं रहेगा जो तुम मुँह में मुसीका लगाओ। तो देखो, जो ज्ञान है, 'ज्ञान' माने सच्चाई की जानकारी है, सत्य एक है या अनेक हैं? (किसी ने कहा- एक है) वो एक कौन है? (किसी ने कहा- सत्यम् शिवम् सुन्दरम्) वो सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, जो सत्य भी है, 'शिव' माने कल्याणकारी भी है और सुन्दर भी है। सुन्दर जो होगा वो शरीर के आधार पर सुन्दर कहा जाता है कि बिना शरीर के सुन्दर कहा जाता है? (किसी ने कहा- शरीर के आधार पर) चेहरा-मोहरा एकदम भोंड़ा हो, टुनटुन की तरह मोटा-ताजा हो, काला-2 भूत हो, तो उसे सुन्दर कहेंगे? सुन्दर तो नहीं कहेंगे। शरीर के आधार पर ही सुन्दर कहा जाता है और शरीर के आधार पर ही भोंड़ा कहा जाता है। तो जब 'सुन्दरम्' शब्द आता है तो कोई शरीरधारी है जो याद के बल पर आत्मा रूपी बीज को इतना पावरफुल, इतना ज्योतिर्मय चमकीला बनाता है कि उसका जो सारा शरीर रूपी झाड़ है, वो सुन्दरतम बन जाता है। जो भी धर्मपिताएँ आए हैं, उनके चेहरे को ध्यान से देखो, वो तो हद के धर्मपिताएँ हैं। जैसे क्राइस्ट है, दुनिया की 200-250 करोड़ आबादी, लगभग आधी आबादी क्राइस्ट को अपना बाप मानती है। वो हद का बाप है या बेहद का बाप है? 250 करोड़ माने हद का है; लेकिन जो 500-700 करोड़ मनुष्य-सृष्टि का बाप है, वो तो बेहद का बाप हो गया। तो जो मनुष्य-सृष्टि रूपी वृक्ष है, उसका जो बीज-रूप बाप प्रजापिता है, वो जब सम्पन्न याद की स्टेज में पहुँचेगा तो शरीर के साथ सम्पन्न स्टेज पर पहुँचेगा या शरीर खत्म हो जाएगा? (किसी ने कहा- नहीं, शरीर के साथ) मुरली में तो बोला है- ''आत्मा और शरीर रूपी नइया को पार ले जाने वाला एक ही बाप खिवैया है।'' (मु.ता.3.11.74 पृ.1 आदि) तुम्हारी आत्मा को भी विषय-सागर से पार ले जाएगा, या कहो विषय-वैतरणी नदी से पार ले जाएगा। तुम्हारी जो शरीर रूपी नैया है जिसमें तुम्हारी आत्मा बिठैया है, इस आत्मा बिठैया को और इस शरीर रूपी नैया को, दोनों को पार ले जाने वाला एक ही खिवैया है- ये ब्रह्मा के मुख से शिव बाप ने मुरली में बोला है। तो झूठ बोला? (सभी ने कहा- नहीं, सच है) सच्चा बोला ना! तो शरीर के आधार पर कोई आत्मा याद में ऐसी टिक करके, आत्मा और शरीर दोनों से इतनी उज्जवल हो जाएगी, इतनी सुन्दर हो जाएगी कि दुनिया का कोई भी धर्मपिता उसकी समानता नहीं कर सकता। जैसे- गुरुनानक को देखो, कितना सुन्दर चेहरा दिखाई पड़ता है। क्राइस्ट को ध्यान से देखो, सुन्दरता दिखाई पड़ती है या नहीं दिखाई पड़ती? (किसी ने कहा- दिखाई पड़ती है) महात्मा बुद्ध को देखो, चेहरे में वो रूहानी आब दिखाई देती है या नहीं दिखाई देती है? (किसी ने कहा- देती है) तो सुन्दर हुए ना! उनके अपने धर्म के जितने भी फॉलोअर्स हैं, उनके बीच वे धर्मपिताएँ सबसे सुन्दर हुए; लेकिन 500 करोड़ के बीच कोई सुन्दर हो, धर्मपिताओं का भी बाप हो, बापों का भी बाप ग्रेट-2 ग्राण्ड फादर हो, वो तो एक ही मनुष्य-सृष्टि का बीज-रूप बाप है। वो बीज-रूप बाप जब याद की सम्पन्न स्टेज पर पहुँचेगा तो कितना सुंदर होगा! इतना सुंदर होगा कि जो झाड़ के चित्र के

ऊपर बैठा हुआ दिखाया गया है कि विनाश के काल में सारी मनुष्य-आत्माएँ उसी को याद कर रही होंगी। किसको? उसी एक मनुष्य-सृष्टि के बाप को याद कर रही होंगी। कैसी स्टेज में? साकारी सो निराकारी-शिवबाबा को याद कर रही होंगी या किसी और को याद करेंगी? (किसी ने कहा- शिवबाबा को) एक ही शिवबाबा की याद में सभी मनुष्य-आत्माएँ याद करके कम-से-कम एक जन्म की जीवन्मुक्ति ज़रूर प्राप्त करेंगी। तो देखो, वो ही शिवलिंग है जो भारतवर्ष में गाँव-2 में/शहर-2 में, सारे भारत में उसकी पूजा होती है और सारी दुनियाँ की खुदाइयों में वो ही लिंग-मूर्तियाँ सबसे जास्ती तादाद में मिली हैं। वो मूर्ति भी है, 'मूर्ति' माना 'मूर्तमान'; साकार भी है, बड़ा है ना और निराकार भी है माने निराकारी बिंदु स्टेज में टिका हुआ है; देह की इन्द्रियों की स्मृति नहीं है। उसका जो असली रूप है वो सोमनाथ के मंदिर में सात्विक रूप दिखाया गया। लिंग बड़ा रूप- शरीर, जिसमें याद की स्टेज में इन्द्रियाँ जैसे कि हैं ही नहीं। जो सम्पन्न स्टेज होगी, कैसी बनेगी? कानों से सुनते हुए भी नहीं सुनना- दुनिया ग्लानि करती रहे, एक कान से सुना, दूसरे कान से निकाल दिया; क्योंकि दुनिया अज्ञानी है, इनकी बातों को क्या सुनना! जो अज्ञानी हैं वो तो अज्ञान की बातें ही करेंगे। अज्ञानी हैं वो ग्लानि ही सुनाएँगे या ज्ञान सुनाएँगे? अज्ञानी तो ग्लानि ही सुनाएँगे; तो उनके ऊपर क्या ध्यान देना! आँखें देखते हुए भी न देखें। किसको देखें? अपने बाप को देखें। कान अगर सुनें तो अनेकों की बातें न सुनें। किसकी सुनें? एक बाप की बात सुनें और धारण करें; दूसरों की बातें एक कान से सुनें, दूसरे कान से निकाल दें। इसलिए मुरली में बोला- एक से ज्ञान सुनना चाहिए। अनेकों से सुना तो ज्ञान व्यभिचारी हो जाएगा। ''मेरे से ही सुनो। अगर औरों से भी सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा।'' (मु.ता.12.1.74 पृ.2 आदि) जैसे सतयुग-त्रेता के भारतवासी देवात्माओं ने द्वापरयुग में आकर दूसरे-2 धर्मपिताओं और उनके फॉलोअर्स का ज्ञान सुना और उन धर्मों में कन्वर्ट हो गए। अगर उन दूसरों का ज्ञान न सुना होता तो क्या कन्वर्ट होते? (किसी ने कहा-नहीं होते) इसलिए बताया- अभी 5000 वर्ष के ड्रामा की शूटिंग/रिहर्सल/रिकॉर्डिंग हो रही है। एक से सुनना है, अनेकों से नहीं सुनना है, और ग्लानि की बातें तो बिल्कुल ही नहीं सुनना है। इसलिए भक्तिमार्ग में बोलते हैं- ''सद्गुरू निंदा सुनिए न काना, होय पाप गऊ घात समाना''। जैसे गऊ हत्या कर दी, ऐसे समझ लो, बड़ा पाप बन जाएगा। तो क्या करना है? एक से सुनना है।

तो अच्छी तरह से एक साकार सो निराकार को समझो और दूसरों को फिर समझाओ। अच्छी तरह से समझ करके याद करो और उसके बताए ज्ञान विस्तार के आधार पर 84 का चक्र को याद करो। चक्र भी कोई बच्चा, ये बच्चे को भी कोई सात रोज़ बैठ करके समझाए तो इसकी बुद्धि में भी 84 का चक्र बैठ जाएगा कि सतयुग में आठ जन्म होते हैं, 150 वर्ष आयु होती है; त्रेता में 13 जन्म होते हैं, 125 वर्ष आयु होती हैं; द्वापर में ज़्यादा-से-ज़्यादा सौ साल और उससे कम आयु होती है और कलियुग में तो आयु की सीमा ही नहीं, एकदम कोई पेट में ही मर जाते हैं, बच्चा बन करके मर जाते हैं। आयु जैसे न के बराबर हो जाती है। तो ये चक्र को समझाना क्या बड़ी बात है! सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग, संगमयुग, फिर सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग, फिर संगमयुग। चक्र समझाना बिल्कुल सहज है। कोई से पूछो- अभी क्या है, तो कहेगा- कलियुग है। बोलो-नहीं, अभी कलियुग नहीं है। कोई पूछे- क्यों कलियुग नहीं है? बताओ- कि देखो, महाभारत शास्त्र में लिखा है कि 5000 वर्ष पहले भारत में महाभारी-महाभारत युद्ध हुआ था। जिससे बड़ा युद्ध कोई न होता है, न होगा, न हुआ है और उस युद्ध में यादवों के पेट से लौहे के मूसल निकले थे, जिनको आज 'मिसाइल' कहा जा रहा है। इस पेट से नहीं निकले थे, ये बुद्धि रूपी पेट से मूसल निकले थे। उन मूसलों से उन्होंने घर बैठे-2 सारी दुनियाँ को भस्म कर दिया था, खुद भी भस्म हो गए। तो देखो, जब भगवान आते हैं तो कलियुग नहीं रहता है। तो कलियुग का अंत समझो और जब भगवान के जाने का टाइम होता है, तो समझ लो- सतयुग आ गया। पहचान क्या है? भगवान जब आते हैं तो ब्राह्मणों की नई दुनिया का, ब्राह्मण सो देवता बनने वालों का संगठन बनाते हैं। आज से 79-80 साल पहले न भगवान आया था, न दुनिया में ब्रह्मा था, न ब्राह्मणों का संगठन था। ब्रह्मा भी आज से 80 साल पहले आया और ब्राह्मणों का संगठन भी 80 साल पहले बना। फिर क्या हुआ? भगवान जब आते हैं, तो स्थापना के साथ-2, नई दुनिया बनाने के साथ-2 पुरानी दुनिया को भस्म करने का भी सामान/मसाला तैयार करवाय देते हैं। तो देखो, सन् 1936 से पहले इस सारी दुनियाँ में ऐटमिक एनर्जी का कोई नाम-निशान नहीं था। भगवान आया, उस समय ऐटमिक एनर्जी का फाउण्डेशन पड़ना शुरू हुआ और उसका विस्फोट भी 1945 में हिरोशिमा-नागासाकी में हो गया। उस समय शूटिंग भी हो गई। ब्राह्मणों की जो दुनिया बनी थी, 1936 में जो संगठन बना था, वो चैतन्य हीरों की शमा 1945 तक भस्म हो गई। कहाँ की बात है? 'जापान', जहाँ का पानी चला गया, ज्ञान-जल बुद्धि में से चला गया। तो दोनों तरफ़ ये हुआ- बाहर की दुनिया में भी हुआ और अंदर की ब्राह्मणों की दुनिया में भी; स्थापना भी हुई और विनाश भी हुआ। तो ये निशानी है, जब भगवान आते हैं तो नई दुनिया का संगठन भी ब्रह्मा की संतान, ब्राह्मणों के द्वारा तैयार कराते हैं और दूसरी तरफ़

पुरानी दुनिया का विनाश भी कराते हैं, मसाला तैयार कराय देते हैं। उससे पहले ऐटम बम्ब न बने थे, न फोड़े गए। अब बताओ, कलियुग है या संगमयुग है? (किसी ने कहा- संगमयुग है) भगवान आ गया तो संगम है। कलियुग का और सतयुग का संगम है। बताओ, अरे भई, अभी क्या है? वो कहेगा कलियुग है। बोलो- नहीं, कलियुग नहीं है, अभी संगमयुग होना चाहिए; क्योंकि पुरानी दुनिया को भस्म करने का बारूद, ऐटम बम्ब तैयार हो गया है और नई दुनिया का नक्शा कोई इंजीनियर की बुद्धि में, बेहद का कोई ब्राह्मण है जिसकी बुद्धि में नई दुनिया का नक्शा आ गया है और न मानो तो ब्रह्माकुमारी आश्रमों में उस समय, 1966 में एक बड़ा चित्र बनाया जाता था, जो गेट पर लगा रहता था। पता है कौन-सा चित्र था? (किसी ने कहा- कृष्ण कलियुग को लात मार रहा है) हाँ, उसमें श्रीकृष्ण को दिखाया था। उसमें दिखाया था कि कृष्ण के हाथों में नई दुनिया का गोला है और पाँव में पुरानी दुनिया का गोला है, कलियुग को लात मार रहा है और मोटे-2 अक्षरों में लिखा होता था- 'श्रीकृष्ण आ रहे हैं'। जैसे ही 1976 हुआ, वो चित्र उठाकर रख दिया। वो बड़ा बोर्ड जो गेट पर लगाया जाता था- ''श्रीकृष्ण आ रहे हैं,'' वो उनको समझ में नहीं आया- कहाँ आ रहे हैं, कहाँ चले गए। तो उन्होंने उठाकर रख दिया। अब जो समझने वाले ब्राह्मण थे, उन्होंने समझ लिया कि बाबा ने तो मुरली में बोला है- इन लक्ष्मी-नारायण सो राधा-कृष्ण का जन्म कब हुआ? ''इन ल०ना० का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।'' (सन् 66 की वाणी है) (मु०4.3.70 पृ०3 मध्य में रिवाइज़ हुई) तो 1976 में वो संगमयुगी राधा-कृष्ण वाली आत्माएँ माना राम-सीता वाली आत्माओं के शरीरों में वो सतयुगी कृष्ण की आत्मा ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा के रूप में प्रवेश कर जाती है, ब्रह्मा के मुखवंशावली बच्चों ने समझ लिया और जो कुखवंशावली ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ थे, उन्होंने ये बात नहीं समझी। आज तक भी नहीं समझी। तो बताओ, अभी कलियुग नहीं है, क्या है? संगम है। क्यों? क्योंकि विनाश सामने खड़ा है, महाभारी-महाभारत युद्ध सामने खड़ा है। दुनिया में एक देश ऐसा यही भारत है, जहाँ इतनी-2 जातियाँ पनप रही हैं। सबसे ज़्यादा जातिवाद दुनिया में कौन-से देश में है? (किसी ने कहा- भारत में) दुनिया में एक देश यही भारत है, जहाँ दुनिया के ज़्यादा-से-ज़्यादा धर्म के लोग पनप रहे हैं और उसकी राजधानी दिल्ली में भी क्रिश्चियन धर्म के लोग भी बहुत हैं, सिक्ख धर्म के भी बहुत हैं, मुसलमान भी बहुत हैं, हिन्दू भी बहुत हैं, जैनी भी बहुत हैं और बौद्धी भी बहुत हैं। हर धर्म के लोग इस भारत में और भारत की राजधानी में डटे हुए पड़े हैं; क्योंकि जब महाभारत युद्ध हुआ था तो पाण्डव कहाँ थे? हस्तिनापुर में। 'हस्ती' माने हाथी, 'पुर' माने हाथियों के रहने का नगर। हाथी देह-अभिमानी, देह-अहंकारी होता है या नहीं होता है? (किसी ने कहा- होता है) मारे देह-अहंकार के ऐसे-2 चलेगा, जैसे दुनिया में मेरे से ज़्यादा ताकतवर, मोटा-ताज़ा, लम्बा-चौड़ा और कोई हो ही नहीं सकता। बहुत अहंकारी! तो देखो, भारत की राजधानी कलियुग के अंत में दिल्ली है, जहाँ से महाकाली पैदा होती है। जो सतोप्रधान स्टेज में जगदम्बा कही जाती है। जिस अम्बा, जगत की माता की गोद में सारे धर्मों ने राज्य किया है हिस्ट्री में, एक धर्म ने नहीं। सब धर्म वालों ने उस गोद में रह करके मनमाना राज्य किया है, मनमाना खून-खराबा किया है। कोई गंदे बच्चे होते हैं वो माँ को परेशान भी तो बहुत करते हैं और कोई बच्चे ऐसे होते हैं कि पैदा होते हैं तो माँ को कोई भी दुख नहीं होता। पैदा होते हैं, माँ को पता भी नहीं चलता कि बच्चा पैदा हो गया। तो देखो, इस दिल्ली की गोद में सारी दुनियाँ के सभी धर्म वालों ने पालना ली है। ये जगत की माँ है। तो ये दिल्ली रूपी जगदम्बा जिसकी गोद में सारी दुनियाँ के लोग पलते हैं, वो दिल्ली जब तमोप्रधान महाकाली बनती है तो बहुत अहंकारी हो जाती है; इसलिए मुरली में भगवान बाप ने ब्रह्मा के मुख से बोला है कि ऐसा भी समय आएगा जो भारत में कोई नास्तिक क्रिश्चियन को भी राजा बनाकर बैठा देंगे, राष्ट्रपति बनाकर बैठा देंगे। वो नास्तिक राजा बन करके बैठेगा तो 'यथा राजा तथा सारी प्रजा' नास्तिक बन जाएगी। नास्तिक क्या करते हैं? न आत्मा को मानते हैं, न परमात्मा को मानते हैं, न जानते हैं, न धर्म को मानते हैं, न स्वर्ग को मानते हैं, न धर्मग्रंथ को मानते हैं, न धर्मपिता को मानते हैं, कुछ भी नहीं मानते। मारे अहंकार के बस अपन को ही सब-कुछ समझते हैं और उस अहंकार के जुनून में आ करके ऐटम बम्ब-जैसी खतरनाक चीज़ पैदा कर लेते हैं। हम सारी दुनियाँ का विनाश कर देंगे! देखें, हमारा मुकाबला कौन करते हैं! इतना अहंकार कि अंत में भारत में नास्तिकों का राज्य हो जाता है।

तो बताया, जो नास्तिक ऐटम बम्ब बनाते हैं और बाबा ने बताया है- बड़े-ते-बड़ा बॉम्ब क्या है? (किसी ने कहा- परमात्म प्रत्यक्षता बम्ब) परमात्मा तो हमारा बाप है ना! और बच्चों के सामने बाप का परिचय, बाप की प्रत्यक्षता कौन करती है? माँ करती है। तो माँ ऐसा खतरनाक ग्लानि की बदबू भरा बॉम्ब छोड़ेगी कि सारी दुनियाँ में बाप की प्रत्यक्षता हो जाएगी, बाप का प्रत्यक्षता रूपी बॉम्ब फट पड़ेगा, पुरानी दुनिया खलास और नई दुनिया प्रत्यक्ष हो जाएगी। तो ज़रूर पुरानी दुनिया और नई दुनिया का संगम है तब तो विनाश सामने खड़ा है ना! वो ही महाभारत लड़ाई की बात है। अभी ये याद करने में क्या होता है! विनाश सामने खड़ा है तो

ज़रूर पतित से पावन बनाने वाला भी तो कोई होगा, राजयोग भी सिखाने वाला कोई होगा; क्योंकि अर्जुन-जैसा मनुष्य ही नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी-जैसे पावन देवी-देवता बनते हैं। तो बनाने का राज़ सिखाने वाला भी कोई होगा या नहीं होगा? (किसी ने कहा- होगा) क्या सिखाने वाला? कि मनुष्य से देवता बनाने का राज़ क्या है? तरीका क्या है? युक्ति क्या है?

5.11.66 की वाणी का चौथा पेज- ये कोई बड़ी बातें नहीं हैं समझने की कि पतित से पावन कैसे बनते हैं; जो पतित मनुष्य हैं, वो पावन देवता कैसे बनते हैं? पावन देवता द्वापर में, द्वैतवादी युग में देहधारी धर्मगुरु-धर्मपिताओं के संग के रंग में आ करके पतित कैसे बनते हैं? पतित कैसे बने और पावन कैसे बनते हैं? चलो, पावन कैसे बनते हैं वो तो बहुत पुरानी बात हो गई, 5000 साल पुरानी बात हो गई कि भगवान आ करके पतित से पावन बनाते हैं; लेकिन भारतवासी देव-आत्माएँ पतित कैसे बनते हैं, वो तो 2500 साल की हिस्ट्री हमारे सामने मौजूद है ना कि जो देवताएँ थे वो अपने को हिन्दू कहला करके और दूसरे-2 धर्मों में कैसे कन्वर्ट होते गए! कैसे कामी इस्लामी बन गए, कैसे क्रोधी क्रिश्चियन्स बन गए, कैसे लोभी मुस्लिम बन गए। कैसे विकारी बन गए? ये समझने की कोई बड़ी बातें नहीं हैं- अनेकों देहाभिमानियों के संग के रंग से बन गए। द्वापरयुग से एक का संग का रंग लगा या अनेकों का लगा? अनेकों के संग के रंग से पतित बनते हैं और एक आत्माभिमानी सदा शिवबाबा के संग के रंग से पावन बनेंगे। अनेक हैं पतित बनाने वाले और एक है पावन बनाने वाला। एक कौन? जिस एक के लिए कहा जाता है- 'गॉड इज़ वन और ट्रुथ इज़ गॉड'; सच्चाई ही भगवान है, भगवान एक है माने सत्य एक है। सत्य अनेक नहीं हो सकते। सौ परसेण्ट सत्य एक ही होगा, बाक़ी कुछ-न-कुछ झूठ ज़रूर होंगे। जैसे- दूध का भरा हुआ घड़ा हो, उसमें एक बूंद साँप का विष डाल दिया जाए, तो सारा ही विष हो जाएगा। ऐसे ही कितनी भी सच्चाई भरी पड़ी हो और एक छोटा-सा झूठ उसमें मिल गया कि सब आत्माएँ सो परमात्मा। ये भी आत्मा-परमात्मा, वो भी आत्मा-परमात्मा, शिवोऽहम्- हम ही भगवान हैं, भगवान सर्वव्यापी है। ये छोटी-सी बात सारी दुनियाँ की बुद्धि में आ गई। जो मुसलमान पहले कहते थे- खुदा अर्श में रहता है, सूरज-चाँद-सितारों से पार अर्श में रहता है, फर्श में नहीं रहता है; वो मुसलमान भी आज कहने लगे- 'खुदा ज़र्रे-2 में है'। जैसे हिन्दू कहते हैं- भगवान कण-2 में है। तो देखो, सबकी बुद्धि में झूठ समा गया या नहीं समा गया? (किसी ने कहा- समा गया) सब झूठे हो गए। जन्म-मरण के चक्र में आने वाली 500-700 करोड़ मनुष्य-आत्माओं के बीच में एक ही निकलेगा जो सत्य ज्ञान को पूरा हप करता है। जो आत्मा-2 भाई कहे जाते हैं, उनमें कोई आत्मा रूपी भाई सबसे बड़ा होगा या नहीं होगा? होगा। तो आत्माओं का बाप परमपिता शिव, जो निराकार आत्माओं का बाप है, उस निराकार बाप से निराकारी वर्सा मिलेगा या साकारी वर्सा मिलेगा? (किसी ने कहा-निराकारी) निराकारी बाप निराकारी वर्सा देता है, साकारी बाप साकारी वर्सा देता है। तो निराकारी बाप का निराकारी वर्सा क्या है? निराकारी बाप का निराकारी वर्सा है- ज्ञान। कैसा ज्ञान, अखूट भण्डार। जिस अखूट भण्डार में से कोई सारा ही ले ले, तो भी अखूट ही बचता है, खूटता ही नहीं और जो लेने वाला है, अखूट ज्ञान का भण्डार अपने अंदर धारण करने वाला है, वो बाप का बड़ा बच्चा होगा या कोई भी बच्चे होंगे? (किसी ने कहा- बड़ा बच्चा) भारत में क्या परम्परा रही? राजाओं ने अपना वर्सा बड़े बच्चे को दिया या छोटों को दिया? (किसी ने कहा- बड़े को) ये परम्परा किसने डाली? संगमयुग में भगवान ने डाली। भगवान ही तो गीता में कहते हैं- ''मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सवर्शः।'' (गीता 3/23)- इस संसार में जितने भी मनुष्य हैं, वो मेरे रास्ते का ही अनुगमन करते हैं। मैंने अपने बड़े बच्चे परम+आत्मा को बेहद का वर्सा दिया, तो उस बेहद के निराकारी वर्से को वो बच्चा ही अच्छी तरह से धारण करता है और उस वर्से का सदुपयोग करता है और बाक़ी सब कुछ-न-कुछ दुरुपयोग कर देते हैं- उस सत्य ज्ञान में या तो मनमत मिक्स कर देते हैं या तो मनुष्यों की मत मिक्स कर देते हैं; मनुष्य मत पर चल पड़ते हैं या तो मनमत पर चल पड़ते हैं; श्रीमत में, मनमत और मनुष्य मत की मिक्सचैरिटी कर देते हैं। एक ही बच्चा है कि मैं जैसा 100 परसेण्ट सच्चाई का वर्सा देता हूँ, उस सौ परसेण्ट सच्चाई को दूसरों को देता है, डरने की बात ही नहीं। जैसे सीढ़ी के चित्र में नीचे लिखा हुआ है, गुरुओं की सभा बैठी है और कांग्रेसियों की सभा बैठी है, उनके नीचे लिखा हुआ है कि ये हैं पतित बनाने वाले। तो जब 1976 में विनाश नहीं हुआ, तो जो कुखवंशावली झूठे ब्राह्मण हैं, उन्होंने फटाफट-2 वो चित्र हटा दिए। जैसे लक्ष्मी-नारायण के चित्र में नीचे लिखा हुआ था- आने वाले 10 वर्षों में पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना हो जावेगी। ''10 वर्ष में हम भारत को फिर से सतयुगी, श्रेष्ठाचारी, 100 प्रतिशत पवित्रता-सुख-शांति का दैवी स्वराज्य कैसे स्थापन कर रहे हैं और इस विकारी दुनिया का विनाश कैसे होगा, वो आकर समझो।'' (मु.ता.25.10.66 पृ.1 मध्य) नहीं हुई तो क्या किया, फटाक से वो चित्र हटा दिए। तो सच्चा काम किया या झूठा काम किया? (किसी ने कहा-झूठा काम) विनाश तो हुआ ही नहीं, झूठा कहाँ किया? (किसी ने कहा- हाँ, सच्चा किया) सच्चा काम किया?

अरे, वाह! माने अच्छा काम किया कि चारों चित्र हटा दिए, भगवान ने जो साक्षात्कार से तैयार कराए थे। (किसी ने कहा- नहीं, अच्छा नहीं किया) घड़ी में अच्छा किया, घड़ी में झूठा किया। सब-कुछ सत्य वचन महाराज! तो जो सच्चा होगा वो हिलेगा नहीं। सच्चाई है तो डंके की चोट पर सच्चाई बोलना चाहिए, झूठ बोल करके दूसरों को भ्रमित नहीं करना चाहिए। सत्य अडिग है या डिगने वाला है? सत्य अटल है या टलने वाला है? सत्य अचल है या चलायमान है? सत्य अचल है, उसकी यादगार ही माउण्ट आबू में 'अचलघर' दिखाया है। तो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कोई आत्मा है जो सत्य ही सुनाएगी, असत्य बात नहीं बताएगी। सत्य सबसे ऊँची चीज़ है, उसी को कहा जाता है- 'ज्ञान' और सत्य एक ही है; सत्य अनेक नहीं हो सकते और सत्य का अभाव भी इस दुनिया में कभी नहीं होता। सारी दुनियाँ विनाश के गाल में चली जाएगी; लेकिन जो सच्चा होगा वो विनाश के गाल में नहीं जाएगा। वो क्या है? कालों का काल 'महाकाल' है, जिसको कोई काल खा ही नहीं सकता। ऐसा सत्य है।

तो बताया, जब पतित से पावन बनेंगे तो ज़रूर कोई राजयोग से राजाई के राज़ को सिखलाने वाला होगा। बड़ी बात नहीं है समझने की; परन्तु बाप कहते हैं बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं, एकदम पत्थर बुद्धि, बंदर बुद्धि एकदम, जिनकी बुद्धि में बैठता ही नहीं एकदम। क्या नहीं बैठता है? (किसी ने कहा-ज्ञान) माने जो आज ब्राह्मण हैं, उनकी बुद्धि में ज्ञान नहीं बैठा? अरे, सत्य कौन है इस दुनिया में, जो सारी दुनियाँ खलास हो जाएगी; लेकिन वो खलास नहीं होगा? वो कालों का काल, महाकाल कौन है, अकालमूर्त? (किसी ने कहा- शंकर) वो नहीं खलास होगा। उसको एवरलास्टिंग पहचाना? कि आज पहचानते हैं, कल कोई ने दूसरी बात सुना दी- अरे नहीं, ऐसा नहीं है, वो भगवान नहीं है, बड़ा शैतान है। आओ, हम तुमको बताएँ! बस, दो-चार बातें सुनीं और अनिश्चय बैठ गया। अनिश्चय माने मौत और बाप के ऊपर निश्चय माने सुप्रीम अथॉरिटी बाप के बच्चे का जन्म। तो सभी मनुष्य-आत्माएँ जो भी इस समय ज्ञान में चल रही हैं, वो कुछ-न-कुछ निश्चय-अनिश्चय के चक्र में आती हैं। जब अनिश्चय के चक्र में आती हैं तो जैसे मर गईं और निश्चय में आती हैं तो जैसे बाप का बच्चा बन गईं। क्यों आती हैं? क्योंकि जिस ब्रह्मा से जन्म लिया है, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ही सही। प्रजापिता ब्रह्माकुमारियों ने किससे जन्म लिया? (किसी ने कहा-ब्रह्मा से) अरे, रोज़ मुरली पढ़ते हैं ना? कोई ब्रह्माकुमार ऐसा है जो मुरली नहीं पढ़ता? पढ़ता है कि सुनता है? सुनता है। चलो कोई फर्स्टक्लास मुरली सन्मुख सुनता है, कोई सेकिण्ड क्लास मुरली टेपरिकॉर्डर से सुनता है, कोई थर्ड क्लास कागज़ की मुरली सुनता है। सुनते तो हैं ना! वो मुरली कौन-से मुख से सुनाई गई? ब्रह्मा के मुख से। श्रद्धा बैठी है या नहीं बैठी है? (किसी ने कहा- बैठी है) तो ब्रह्मा को निश्चय है कि ब्रह्मा/कृष्ण की आत्मा इस समय सबसे जास्ती निश्चय-अनिश्चय के चक्र में आ रही है? (किसी ने कहा- अनिश्चय-निश्चय के चक्र में आ रही है।) मुरली में क्या बोला- सबसे जास्ती जन्म-मरण के चक्र में कौन-सी आत्मा आती है? (किसी ने कहा- कृष्ण उर्फ ब्रह्मा वाली) आती है ना? तो जो आत्मा जन्म-मरण के चक्र में अब तक भी आ रही है, उसी के मुख से जो पैदा हुए हैं, वो जन्म-मरण के चक्र में नहीं आएँगे? आ रहे हैं। तो किसको पहचानना है? उस बाप को पहचानना है जो जब से ज्ञान में आया, जब से मुरली में बोला- इन लक्ष्मी-नारायण का जन्म कब हुआ? बाप का प्रत्यक्षता वर्ष 1976 मनाया गया। तो जब से प्रत्यक्षता रूपी जन्म हुआ, तब से लेकर आज तक अनिश्चय के चक्र में न आया है और न भविष्य में कभी आएगा, उस बाप को पहचानना है। उसी से सुनना है, और किसी से नहीं सुनना है। जिससे सुनना है वो अमरनाथ का पद पाने वाला है या अनिश्चय में मरने वालों का पद पाने वाला है? किसका बच्चा बनना है? अमरनाथ को पहचान करके अमरनाथ के बच्चे बनेंगे तो अमर बनेंगे और मरने वालों की बात मानेंगे तो मर जाएँगे, अनिश्चय-बुद्धियों के मृत्युलोक में चले जाएँगे। तो अभी जन्म-मृत्यु का चक्कर चल रहा है या अमरलोक बन गया है? अभी भी जन्म-मरण का चक्कर चल रहा है। जन्म-मृत्यु के चक्र में हम सब आ रहे हैं। जब तक उस अमरनाथ को नहीं पहचाना है; कौन-से अमरनाथ को? जिसकी यादगार कहाँ बनी हुई है? (किसी ने कहा- अमरनाथ माउण्ट आबू में बनी है।) भक्तिमार्ग में अमरनाथ का मंदिर कहाँ है? अरे, अमरनाथ ऊँचा पहाड़ है ना! तो दिखाते भी हैं कि वो कैलाश का वासी है, कैलाश पहाड़ पर रहता है, अमरनाथ पर रहता है माने ऊँचे-ते-ऊँचे स्थान पर रहता है। तो बुद्धियोग से रहने की बात है या शरीर से रहने की बात है? (किसी ने कहा-बुद्धियोग से) बुद्धियोग से ऊँची स्टेज में रहने वाला है। ऐसी ऊँची स्टेज में रहता है, जिस ऊँची स्टेज में वो रहता है, कथा भी सुनाता है; लेकिन जो नं०वार पार्वतियाँ हैं, वो सो जाती हैं और बाबा ने कहा- ''तुम सब पार्वतियाँ हो''। (मु.10.5.65 पृ.2 आदि) तो अज्ञान की नींद में कथा सुनते हुए भी सोने वाली हो या जागने वाली हो? (किसी ने कहा-सोने वाली हैं) कहते हैं- वहाँ कबूतर भी रहते थे। शिव के मंदिर में कबूतर क्या करते हैं? गुटुरुँ-गूँ करते हैं। उनके गले में से आवाज़ निकलती ही नहीं है। जैसे माउण्ट आबू पहाड़ पर रहने वाले जो ब्राह्मण हैं, उनके मुख से सच्चाई की आवाज़ नहीं निकलती है। जैसे रावण के मुख से सच्चाई नहीं

निकलती थी कि वास्तव में भगवान कौन है? वो जानता था कि वास्तव में भगवान कौन है, फिर भी उसके मुख से कभी ये नहीं निकला कि मैं भगवान नहीं हूँ, भगवान कोई और है। ऐसे ही वो कबूतर बुद्धि हैं, जो शिव के मंदिर में गुटुरुँ-गूँ करते रहते हैं, गले की आवाज़ गले में ही रह जाती है; बाहर की दुनिया में वो आवाज़ निकाल नहीं सकते कि कैसे और किस रूप में भगवान आया हुआ है। जानते भी हैं, ऐसी बात नहीं कि बड़े-2, बूढ़े-2, पुराने-2 ब्रह्माकुमार-कुमारी जानते नहीं हैं, दरवाज़े बंद करके सारे ही एडवांस ज्ञान की वाणी सुनते हैं; लेकिन दुनिया के सामने सच्चाई बताते नहीं हैं। अंदर से जानते हैं कि भगवान आया हुआ है। क्यों? अगर बताएँगे तो उनका मान-मर्तबा खलास हो जावेगा। जैसे दुनिया के जो संन्यासी हैं, गुरु हैं, वो ब्रह्माकुमारियों में जाते हैं, सुनते हैं, समझते हैं कि भगवान सर्वव्यापी नहीं है, समझ जाते हैं; लेकिन अपने शिष्यों/फॉलोअर्स को कभी नहीं बताते हैं कि भगवान सर्वव्यापी नहीं है।

तो देखो, जो पत्थरबुद्धि हैं, कोई की बुद्धि में नहीं बैठता, बड़ी मेहनत लगती है ना समझाने में। ये राजधानी की स्थापनाएँ करना सिवाय ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन्त के, कोई में ताकत नहीं रखी है जो नई दुनिया की राजधानी स्थापन कर सकें। राजधानी स्थापन होती है, तभी तो राज्य चलता है। राजा अपनी राजधानी न जमाए तो राजाई चलेगी? नहीं चल सकती। वो कांग्रेसी लोग कहते हैं कि हम रामराज्य लाएँगे। अरे, रामराज्य राम लाएगा या ये लाएँगे? (किसी ने कहा- रामराज्य राम लाएगा) राम वाली आत्मा ही प्रत्यक्ष हो करके नई दुनिया की राजधानी बनाएगी। ये भ्रष्टाचारी मनुष्य राजधानी स्थापन नहीं कर सकते। कोई की ताकत नहीं है। सारी दुनियाँ को पतित से पावन बनाना- ये तो एक ही बाप का काम है। राम बाप को कौन याद करते हैं? जो पतित से पावन बनते हैं, वो ही उसको बुलाते हैं; जो विदेशी-विधर्मी पतित से पावन बनते नहीं, वो उसको बुलाते भी नहीं और बुलाने की शूटिंग भी नहीं करते। अभी भी ब्राह्मणों की दुनिया में हैं- न उस पतित-पावन बाप को जानते हैं, न बुलाते हैं। जो थोड़ा-बहुत जानते हैं, वो ही उस पतित-पावन बाप को अंदर से बुलाते हैं- जल्दी आ जाओ, जल्दी आ जाओ। बुलाते हैं या नहीं बुलाते हैं? (किसी ने कहा-बुलाते हैं) जो पतित से पावन बनते नहीं, वो बुलाते भी नहीं।

तो ये राम बाप का काम है पतितों को पावन बनाना। बाकी क्या हैं वो लोग? धर्मपिताएँ, धर्मगुरु, संन्यासी, विद्वान, पण्डित, आचार्य, कलियुगी राजाएँ, क्या हैं वो लोग? बुद्ध, क्राइस्ट फलाना ये सभी क्या करते हैं? दुनिया को, दुनिया की बुद्धि को और ही पतित विकारी बनाते हैं कि निर्विकारी बनाते हैं? विकारी ही बनाते हैं। अरे, ये देवताएँ तो पवित्र होकर जाते हैं, फिर पावन दुनिया में आते हैं और उनकी वो संस्था जो यहाँ से पवित्र होकर जाती है सो आती है नई दुनिया में। और महिमा तो कोई की भी नहीं है। जो भी नई दुनिया में नारायण बन करके आते हैं, सतयुग के आठ नारायण आठ गद्दियों पर बैठते हैं, उनकी पूजा होती है? सतयुग के आठ नारायणों के मंदिर बनते हैं? (किसी ने कहा- बनते हैं) बनते हैं? वो गिरती कला के हैं या चढ़ती कला के नारायण हैं? खुद भी नीचे गिरते हैं और अपनी प्रजा को भी गिरती कला में नीचे ले जाते हैं। तो वो नारायण कौन है, जो जब से राजयोग सीखता है, जब से राजयोग सिखाने वाले बाप को पहचानता है, तब से लगातार ऊपर चढ़ता है, नीचे गिरता ही नहीं; जब तक सृष्टि का अंत होता है तब भी नीचे नहीं गिरता है, लगातार ऊँचा ही चढ़ता है। कैसा ऊँचा? जैसे सतयुग का फर्स्ट लक्ष्मी-नारायण ले लो। वो इन्द्रियों का सुख लेते हैं; अतीन्द्रिय सुख तो नहीं भोगते हैं। सतयुग के बुद्धू लक्ष्मी-नारायण जो नीचे राधा-कृष्ण के रूप में खड़े हैं, वो तो उत्तरोत्तर गिरती कला वाले सतयुग के हैं; परन्तु उनके भी ऊपर जो लक्ष्मी-नारायण चित्र में खड़े हैं, वो ज्ञान-प्रकाश वलय वाले जन्मदाता हैं। वो चढ़ती कला के हैं; क्योंकि जो देह है, उस देह के कोई अंग से सुख नहीं ले रहे हैं। ध्यान से देखो लक्ष्मी-नारायण के चित्र को। लक्ष्मी-नारायण एक-दूसरे को आँखों से भी नहीं देख रहे हैं और नीचे जो राधा-कृष्ण खड़े हैं, वो एक-दूसरे को देख रहे हैं, वो देह की इन्द्रियों का सुख ले रहे हैं। तो देह विनाशी है या अविनाशी? देह विनाशी है। तो विनाशी देह का सुख लेंगे तो विनाश की ओर नीचे ही जाएँगे, गिरती कला में जाते हैं। सतयुग का पहला नारायण भी अगला जन्म लेगा तो पौने सोलह कला, दूसरा नारायण अगला जन्म लेगा तो वो पौने सोलह कला से साढ़े पन्द्रह कला, उत्तरोत्तर नीचे ही उतरते जाएँगे ना! तो देखो, सतयुग के पहले नारायण से ले करके अंतिम आठवें नारायण तक सब उतरती कला वाले हैं। क्यों? कारण। (किसी ने कहा-सुख ले रहे हैं) कौन-सा सुख ले रहे हैं? देह की इन्द्रियों का सुख ले रहे हैं। देह विनाशी तो इन्द्रियों का सुख भी विनाशी और उनको जो पहले-2 पुरुषोत्तम संगम में जन्म देने वाले ल०ना० हैं, वो संगम में इन्द्रियों का भी सुख नहीं लेते; वो मन-बुद्धि का, वायब्रेशन का सुख लेते हैं। मन-

बुद्धि माने आत्मा। आत्मा अविनाशी है या विनाशी है? (किसी ने कहा- अविनाशी) तो आत्मा का जो मन-बुद्धि का सुख है, वो भी अविनाशी चढ़ती कला वाला है; उतरती कला वाला नहीं है। इसीलिए उन्हीं संगमयुगी कम्बाइंड ल०ना० की पूजा होती है।

उनमें भी एक ही लक्ष्मी-नारायण हैं, जो नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हैं, उनकी और उनके बुद्धि रूपी पेट में प्रवेश सतयुगी पहले जन्म के 16 कला राधा-कृष्ण की ही महिमा है, और कोई की भी महिमा नहीं है, कोई पाई की भी, कौड़ी की भी महिमा नहीं है। तभी तो आगे लिखते थे ना उसमें- बस, एक शिवबाबा इज़ वर्थ डायमण्ड, ऑल अदर बर्थ कौड़ी। माने एक शिवबाबा का हीरे समान जन्म है, औरों का कौड़ी समान जन्म है। कैसे? दुनिया की कोई भी स्त्री जब मरती है, कोई भी पुरुष जब मरता है तो बुद्धि कहाँ जाती है- कौड़ी की शक्ल में जाती है या हीरे को पहचाना हुआ है, हीरे की याद में जाती है? (किसी ने कहा- कौड़ी में) और कौड़ी में अंधेरा है या उजाला है? कौड़ी में अज्ञान-अंधकार भरा हुआ है। सारा जीवन जिस कौड़ी में मनुष्य रमण करते हैं तो अंत समय में वो कौड़ी ही याद आ जाती है। कौड़ी याद आएगी तो 'अंत मते सो गते', वो ही गति हो जाती है।

तो बताया, एक शिवबाबा है जिसका हीरे समान जन्म है और बाकी सबका कौड़ी समान जन्म रूपी प्रत्यक्षता होती है। उनकी प्रत्यक्षता होने से भी कोई फायदा नहीं है। अरे, ये उन सबका क्या बर्थ पाउंड जन्म है जो जन्मदिन मनाते रहते हैं? देह का जन्मदिन मनाते हैं कि आत्मा का मनाते हैं? देह का मनाते हैं। क्या कहते हैं? लिखते थे- 'वर्थ नॉट ऐ कौड़ी।' ये जो बर्थ डे मनाते हैं, एक कौड़ी की भी कीमत नहीं है। 'बर्थ डे', क्या लिखते हो बच्ची? तुम क्या लिखते हो शिवबाबा के लिए? शिवजयंती। शिवजयंती इज़ वर्थ डायमण्ड। शिवजयंती किसके समान है? शिव का जन्म हीरे के समान है। कब हुआ? ब्रह्माकुमारियों से पूछो- तुम 48वीं, 78वीं, 79वीं शिवजयंती मनाती हो, तो कितने वर्ष हुए शिवबाबा को जन्म हुए? (किसी ने कहा- उनको मालूम नहीं है।) तो 68वीं कैसी मनाती हैं? (किसी ने कहा- भक्तिमार्ग से नकल किया है।) हाँ! बाप कहते हैं- 'ऑल अदर जयंती इज़ वर्थ नॉट ए पैनी'। न 36 वाला बर्थ डायमण्ड, न 47 वाला बर्थ डायमण्ड। 45 में पुराना संगठन 'ओम् मण्डली' खलास हुआ। कौन-सा संगठन शुरू हुआ? ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों का दूसरा संगठन 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' शुरू हुआ। ब्रह्मा का जन्म हुआ- बर्थ पाउण्ड या बर्थ कौड़ी? उसकी भी एक कौड़ी की कीमत है या हीरे समान जन्म है? कौड़ी समान जन्म है। अभी कितनी सीधी बात है एकदम और सो भी भारत में आ करके, किसमें आ करके? भारत में। भारत की देखो कितनी बुरी गति है! भारत माने? 'भा' माने ज्ञान की रोशनी, 'रत' माने लगा रहने वाला। ज्ञान की रोशनी में ही जो लगा रहने वाला है, उस भारत की इस समय कितनी बुरी गति है। और देखो, भारत में अभी बाबा आया हुआ है और उसकी गति कैसी है? बुरी गति है, वर्थ नॉट ऐ पैनी। भारत सौ परसेण्ट इनसॉलवेण्ट है और फिर देखो बाप आए हैं। प्रत्यक्ष में आते हैं तो एकदम सॉलवेण्ट/भरपूर बनाय देते हैं। बाप आते हैं तो एक ही बार 5 इयर प्लान बनाते हैं। 1976 में बाप का प्रत्यक्षता वर्ष हुआ और 1977 जो सम्पूर्णता वर्ष मनाया गया, उस 77 के बाद से गिनो 78, 79, 80, 81, 82 और 82 के बाद 5 इयर प्लान पूरा हुआ। उस 5 वर्ष में सारे भारत में बुरी गति थी। 1966 में मुरली में बोला- दर-2 जा करके भिखमंगा बनकर माँग रहा था- सहयोग दो। सीढ़ी के चित्र में नीचे लिखा हुआ है- भारत बेगर/भिखमंगा बना पड़ा है। सीढ़ी में नीचे लिखा है- 40 वर्ष पूरे हुए। कब? 1936 से लेकर 1976 तक 40 वर्ष पूरे होते हैं और भारत पूरा भिखमंगा बन जाता है। भिखमंगा भारत की मुरली में परिभाषा भी बताई- ''बेगर अर्थात् जिनके पास कुछ भी न है।'' (मु.30.5.68 पृ.1 मध्यांत) अपने खाने के लिए रोटी भी नहीं, पहनने के लिए कपड़े भी नहीं, रहने के लिए मकान भी नहीं, ऐसा भिखमंगा भारत। बताया, उस भारत में भगवान आते हैं और भारत देखो, कितनी बुरी गति में है! अभी गुप्त गर्भ में बाबा आया हुआ है। ये भारत की बुरी गति है, ये बाबा तो सद्गति कर रहे हैं। अभी क्या है भारत? वर्थ नॉट ऐ पैनी। एक कौड़ी की भी उसकी कीमत नहीं, सौ परसेण्ट इनसॉलवेण्ट और फिर देखो, बाप आए 5 इयर प्लान में एकदम सॉलवेण्ट बनाय देते हैं। 1982 पूरा होता है और फिर कौन-सा सन् आता है? 1983। अव्यक्त वाणी में बोला- तेरहवें में तेरा होना चाहिए ना! ''अभी तेरहवें में तेरा ही होना चाहिए ना।'' (अ.वा.21.3.81 पृ.80 मध्य) अरे, तेरहवें तक कोई ब्रह्माकुमार-कुमारी सरेण्डर हो करके तेरा नहीं बना? (किसी ने कहा- बना) तेरे को पहचाना कि इस दुनिया में किसमें आता है? सन् 1976 में बाप की प्रत्यक्षता वर्ष में किसमें आया, उसको जानते हैं? (किसी ने कहा- नहीं जानते) जब जानते ही नहीं हैं तो क्या बाप को समझ गए? नहीं समझे ना! शिव आए हैं, भारत के बुद्धि रूपी पेट में जन्म लिया है। कैसा जन्म? (किसी ने कहा- गुप्त गर्भ रूपी जन्म) जैसे कोई माता में बच्चा आता है, पहले निर्जीव होता है या उसमें आत्मा होती है? (किसी ने कहा- निर्जीव होता है) पाँच-छः महीने में फिर उसमें आत्मा प्रवेश करती है। तो माता को पता चलता है या नहीं पता

चलता है? पता चलता है। तो ऐसे ही बताया कि सन् 1976 से पहले वो निर्जीव-जैसा पिण्ड था माना ज्ञान था ही नहीं और शिव आए, भारत रूपी परम्ब्रह्म में, मन-बुद्धि की स्टेज में स्वर्ग स्थापन किया। मन-बुद्धि में स्वर्ग की प्लानिंग, नक्शा आया या नहीं आया? (किसी ने कहा-आया) जो ब्रह्माकुमारियाँ बड़ा पोस्टर दरवाज़े पर लगाती थीं- श्री कृष्ण आ रहे हैं हाथ में नई दुनिया का नक्शा लेकर यानी बुद्धि रूपी हथेली में स्वर्ग स्थापन किया। तो हीरे जैसा आकर बनाता होगा ना! तो बनाने भी आते हैं, कल्प-2 हर 5000 वर्ष के बाद आ करके बनाते हैं। अभी कल्प की ही उल्टी आयु कर दी है। कहते हैं- सतयुग के लाखों वर्ष, त्रेता के जाने कितने, द्वापर के कितने, कलियुग के कितने वर्ष बना देते हैं। कहते हैं- कलियुग से दुगुना द्वापर, कलियुग से तिगुना त्रेता, कलियुग से चार गुना सतयुग। कितनी आयु बताय देते हैं। कोई के भी बुद्धि में नहीं बैठता है कि सारी दुनियाँ, चारों युगों की आयु 5000 वर्ष है। जिनमें से दो युगों में ब्रह्मा का दिन है, देवताओं में ज्ञान की रोशनी रहती है। बुद्धि में, आत्मा में रोशनी रहती है या नहीं रहती? रोशनी की याद यानी आत्मिक स्थिति रहती है। आधाकल्प सतयुग-त्रेता, ब्रह्मा का दिन और द्वापर-कलियुग, ब्रह्मा का रात। तो दिन-रात आधे-2 हुए ना! तो 2500 वर्ष रात की हिस्ट्री तो मनुष्यों के पास है। तो दिन कितने वर्ष का होगा? जब अज्ञान-अंधियारी रात 2500 वर्ष की है तो दिन भी 2500 वर्ष का हुआ। तो टोटल कितना हुआ? (किसी ने कहा- 5000 वर्ष) 'महाभारत' में भी लिखा है- आज से 5000 वर्ष पहले 'महाभारत' युद्ध हुआ था। महाभारत युद्ध में सब विनाश हो गए, पाँच पाण्डव बचे। अभी भी ऐसा होने वाला है। उँगलियों में गिनी जाने वाली थोड़ी-सी साढ़े चार लाख, 4-5 लाख आत्माएँ बचेंगी, बाक़ी 500-700 करोड़ सब खलास हो जावेंगे।

ये बात कोई की पत्थर-बुद्धि में नहीं बैठती है। अरे, हम अपन को भी तो समझते हैं ना! तो बरोबर हम बिल्कुल ही पत्थरबुद्धि थे, कुछ भी नहीं जानते थे। अभी तो देखो कितना समझ गए हैं। इतना ज्ञान को समझ गए हैं, तो भी इतने पत्थर बुद्धि हैं जो बाप कहते रहते हैं- अपन को आत्मा समझ कर मामेकम् याद करो, तो तुम्हारा पाप कर्म भस्म हो जाएगा। तो कोई मामेकम् याद करता है कि एक मिनट भी याद नहीं करता, दूसरों-2 को याद करना शुरू कर देते हैं! क्या करते हैं- मामेकम् याद करते हैं या नहीं करते हैं? हाथ उठाओ, एक शिवबाबा को कौन याद करते हैं? हाथ उठाओ। माता जी, ज़रा खड़ी हो जाओ, सब लोग चेहरा देखें कि एक माता तो निकली जो एक बाबा को याद करती है- मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई, कोई बाल-बच्चा याद नहीं आता! माता जी दुबारा हाथ उठाना। अच्छा! तो बाबा कहते हैं- एक को याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म भस्म होने लगेंगे। जब तक औरों-2 की याद आती रहेगी तब तक पाप कर्म पूरे भस्म नहीं हुए हैं- ऐसे समझो। ज़रूर पाप कर्मों का बोझा अभी चढ़ा हुआ है। देह के सम्बंधियों की या देह के पदार्थों की- खीर-पूड़ी, रसगुल्ला की याद आती है या देह के सम्पर्कियों की याद आती है, तो जिनकी-2 याद आती है, उनसे पूर्वजन्मों का हिसाब-किताब रहा हुआ है; इसलिए वो आत्माएँ याद में हमारे सामने आ जाती हैं और शिवबाबा को याद नहीं करते देतीं। वो कहती हैं- 'ऐ किसको याद कर रहे हो, पहले हमसे तो निपट लो'! तो देखो, तुम एक मुझे याद करोगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम्हारे पास उसकी निशानी क्या होगी? पाप भस्म होंगे उसकी निशानी क्या होगी? अपार खुशी आ जावेगी। क्या बन जावेंगे? एक बाप से गुप्त सम्बंध जोड़ने वाले सच्चे गोप और गोपी बन जावेंगे। अभी बहुतों की याद आती है कि एक की याद आती है? (किसी ने कहा- बहुतों की) एक के साथ संबंध याद आते हैं या अनेकों संबंध याद आते हैं? (किसी ने कहा- अनेकों संबंध) अनेकों संबंध याद आते हैं तो सच्चे गोप-गोपी हैं या नहीं हैं? (किसी ने कहा- नहीं हैं) गुप्त सम्बंध जोड़ने वाले को गोप-गोपी कहा गया है, जिस संबंध को हमारी आत्मा अंदर से संकल्पों में अनुभव करे, दूसरों को बताने की ज़रूरत नहीं है; हम अंदर-ही-अंदर खुश होते रहें, दूसरों को वो खुशी मालूम ही न पड़े; अंदर की खुशी प्राप्त हो, बाहर से मुख से बोलने की दरकार ही नहीं- हमें शिवबाबा मिल गया। जो देखेगा, हमारा खुशनुमा चेहरा देखते ही कहेगा- अरे, इनको क्या मिला है? ज़रूर इनको भगवान मिला है। दुनिया में इतना हाय दैया तोबा मच रहा है, विनाश लीला चल रही है और इनकी खुशी का पारावार चढ़ रहा है। तो लोगों को विश्वास होगा या नहीं होगा? (किसी ने कहा- होगा) तुम्हारा चेहरा ही क्या करेगा? मुख से ज्ञान बोलने की दरकार नहीं रहेगी, तुम्हारा चेहरा ही सर्विस करेगा।

तो अभी ये बात नहीं समझ सकते हैं। गुप्त वेष में शिव आए हैं, भारत में जन्म लिया है। कैसा जन्म लिया है? जैसे बच्चा माँ के पेट में आता है, तो कहेंगे जन्म लिया? (किसी ने कहा- नहीं) उसमें तो आत्मा ही नहीं है। फिर आत्मा प्रवेश करती है- चुर्र-पुर्र होती है, पेट में हरकत होती है, माता को पता चलता है। भारत माताओं को पता चलता है, विदेश की माताओं को नहीं। क्या अंतर

है? विदेश की माताएँ ज़िन्दगी में ढेर-की-ढेर शादियाँ करती हैं और भारत माताएँ, क्या चलन/परम्परा है? एक जीवन में एक ही शादी करेगी, दूसरी शादी नहीं करेगी। तो भारत माता में जन्म लिया है, भारत माता में आया हुआ है और बड़े-ते-बड़ी माता कौन? (किसी ने कहा- ब्रह्मा) कौन-सा ब्रह्मा? नाम बताओ। (किसी ने कहा- जगदम्बा) फिर एक जगदम्बा को नमन करें? जगदम्बा-जैसी तो नौ देवियाँ हैं। तो एक को याद करें या नौ को याद करें? (किसी ने कहा- एक को) तो जगदम्बा को आप याद करते हैं? (किसी ने कहा- माँ की बात हो रही थी...) जगदम्बा में शिव बाप आए हैं? (किसी ने कहा- जगदम्बा में नहीं, शंकर में शिव आते हैं।) भारत में जन्म लिया है। किसमें जन्म लिया है? 'भा' माने ज्ञान की प्रैक्टिकल रोशनी में जो सदैव रत/बिज़ी रहता है, उसमें जन्म लिया है। उसकी बुद्धि में स्वर्ग स्थापन किया है, बुद्धि रूपी हथेली में स्वर्ग का नक्शा दिया है, जो हीरे जैसा आकर बनाता होगा ना! तो बनाने भी आते हैं, कल्प-2 आ करके हर 5000 वर्ष पर बनाते हैं। कोई की भी बुद्धि में ये बात नहीं बैठती है। अरे, हम अपन को भी तो समझते हैं ना बच्चे! बिल्कुल ही पत्थरबुद्धि। इतने पत्थरबुद्धि जो बाप कहते हैं- अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो, तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा और तुम गोप-गोपी बन करके बहुत खुश हो जाएँगे। जो गायन है- अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो किससे पूछो? गोप-गोपियों से पूछो। ऐसे गोप-गोपी बने हो? अभी नहीं बने हैं; क्योंकि अभी एक के साथ सर्वसंबंध नहीं जोड़ पाए हैं, औरों-2 की याद आती रहती है। तो ये संबंध देखो और किसी युग में नहीं होगा। कौन-सा संबंध? (किसी ने कहा- सर्वसंबंध) गोप-गोपियों का कोई भी युग में नहीं होगा, सतयुग में भी नहीं होता है। ये संबंध होते ही यहाँ हैं जब कृष्ण का वर्णन भागवत के साथ है, तो कोई सतयुग का थोड़े ही वर्णन है। भागवत में जिस कृष्ण का वर्णन भगवान के रूप में है, वो कृष्ण सतयुग का पहला पत्ता है या संगमयुग का कृष्ण है? (किसी ने कहा- संगमयुग का कृष्ण) वो सतयुग के कृष्ण का वर्णन थोड़े ही है। वर्णन फिर भी यहाँ का, इस संगमयुग का है, जहाँ उस भगवान के साथ 16,000 गोप-गोपियाँ प्रैक्टिकल में दिखाई देंगी। लोगों को मानना ही पड़ेगा। वो द्वापरयुग उन्होंने लिख दिया है कि द्वापर के अंत में कृष्ण आया, 16,000 हज़ार गोप-गोपियों के साथ संबंध जोड़ा। वो वहाँ की बात नहीं है, कहाँ की बात है? संगमयुग की बात है। देखो, शास्त्रों में कितना घोटाला कर दिया है। सतयुग से भी पहले संगम की बात को द्वापर में कृष्ण को डाल दिया। क्यों डाल दिया? अरे! क्योंकि जब द्वैतवादी युग शुरू होता है, संगम में दूसरे-2 धर्मपिताएँ- इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट प्रत्यक्ष होने लगते हैं। कौन-से युग में प्रत्यक्ष होते हैं? द्वापरयुग, द्वैतवादी युग में। तो संगम में भी शूटिंग होगी कि नहीं? (किसी ने कहा- होगी) तो जब हमारी राजधानी स्थापन होगी, तो दूसरे-2 धर्म के बीज वा आधारमूर्त भी द्वापरयुग में प्रत्यक्ष होने लगेंगे; तो उस संगम समय की बात है कि द्वापर में कृष्ण का जन्म हुआ। प्रत्यक्षता रूपी जन्म की बात है। कितना घोटाला शास्त्रों में है। कि भई, ये घोटाला यहाँ की बात है। बाप भी कहते हैं- बच्चे, तुम्हारा ही नाम रखा हुआ है- गोप और गोपियाँ। किस आधार पर नाम रखा जाता है? नाम का आधार काम। क्या काम, जो 'गोप-गोपी' नाम पड़ा? (किसी ने कहा- गुप्त में संबंध जोड़े) हाँ, भगवान बाप को पहचान करके, एक बाप को पहचान करके, एक सत्य को पहचान करके उसके साथ संबंध जोड़ा। कितने संबंध- एक संबंध या सब प्रकार के संबंध जोड़े? सब प्रकार के संबंध जोड़े। बोला है- संगमयुग में बाप के साथ जिस सम्बन्ध की अनुभूति नहीं हुई है, तो उस संबंध के लिए जन्म-जन्मांतर तड़पते रहेंगे और उस संबंध की जो सुख की प्राप्ति होनी चाहिए, वो नहीं हो पाएगी। ''अगर इस समय बाप से सर्व-सम्बन्धों का सुख नहीं लिया है तो सर्व-सुखों की प्राप्ति में, सर्व-सम्बन्धों की रसना लेने में कमी रह जाएगी। ... आत्माओं से सर्व-सम्बन्ध तो सारा कल्प अनुभव करेंगे लेकिन बाप से सर्व-सम्बन्धों का अनुभव अब नहीं किया तो कभी भी नहीं करेंगे।'' (अ.वा.12.10.75 पृ.180 आदि)

तो तुम्हारा ही नाम रखा हुआ है- गोप-गोपियाँ; गुप्त संबंध जोड़ने वाले गोप और गोपियाँ। अभी ये गोप और गोपियाँ राजयोग सीख रहे हैं। सीख रहे हैं या सीख लिया है? (किसी ने कहा- सीख रहे हैं) राजयोग की पढ़ाई पढ़ रहे हैं या पढ़ ली है? (किसी ने कहा-पढ़ रहे हैं) पढ़ाने वाला टीचर है या नहीं है? पढ़ाने वाला सुप्रीम टीचर भी ज़रूर होगा। वो एक ही आत्मा है, जिसके द्वारा सुप्रीम बाप बीज डालने वाला भी है, सुप्रीम बाप वर्सा देने वाला भी है और माता भी है और उसी एक के द्वारा सुप्रीम टीचर भी है और उसी एक के द्वारा सद्गुरू भी है। सद्गुरु निराकार या सद्गुरु साकार? (किसी ने कहा- निराकार, किसी ने कहा- साकार) 'सुंदर मेला कर दिया, जब सद्गुरु मिला दलाल'। दलाल साकार होता है या निराकार होता है? सतगुरु साकार होता है। 'सत्' माने 'सच्चा', 'गुरु' माने जो सद्गति करे। सच्ची सद्गति क्या है? जीवन में भी रहें और जीवन में रहते-2 इन्द्रियों से सुख भोगें; दुख न भोगें, उसको कहेंगे- सद्गति। तो बच्चे राजयोग सीख रहे हैं। अभी पूरा सीखा नहीं है, जब सीख लेंगे तो 'गोप-गोपी' नाम पक्का पड़ जावेगा। काम के आधार पर 'गोप-गोपी' नाम रखा। दुनिया कहेगी- अरे, भगवान इन गोप-गोपियों को पढ़ाते हैं। बस, बच्चे, इससे जास्ती और

तकदीर क्या है जो सारी दुनियाँ इस बात को माने कि भगवान इन गोप-गोपियों को पढ़ाते हैं! यानी बच्चों को, बुड्ढे-बुड्ढियों को, अरे 500-700 करोड़ मनुष्यमात्र को कौन पढ़ाता है? एक भगवान पढ़ाता है, मुक्ति-जीवन्मुक्ति का रास्ता दिखाता है। अरे, प्रैक्टिकल में माने शरीर के द्वारा भगवान पढ़ावें, और क्या चाहिए! तो भगवान पढ़ाते हैं, बरोबर भगवान और भगवती पढ़ाते हैं। पढ़ाने वाले अकेले हैं या डबल हैं? (किसी ने कहा-डबल हैं) अकेले क्यों नहीं पढ़ा सकते? इसीलिए नहीं पढ़ा सकते कि भगवान निवृत्ति मार्ग की पढ़ाई नहीं पढ़ाते हैं। कौन-सी पढ़ाई पढ़ाते हैं? (किसी ने कहा-प्रवृत्ति मार्ग की) और प्रवृत्ति एक की होती है या दो की होती है? (किसी ने कहा- दो की होती है) क्या नाम रखा? प्र+वृत्ति; 'प्र' माने प्रकृष्ट, 'वृत्त' माने गोला। शिव के मंदिर में शिव और पार्वती दिखाते हैं ना! गोला भी दिखाते हैं कि नहीं? (किसी ने कहा- दिखाते हैं) मिलन-मेला मनाते हैं, तो स्त्री-पुरुष वो वृत्त बना लेते हैं। एक-दूसरे के वृत्त अर्थात् सं=सम्पूर्ण, बन्धन में आ जाते हैं तो उसको कहते हैं- प्र+वृत्ति। प्रकृष्ट रूप में वृत्ति; नहीं तो निवृत्ति। दूर-2 हैं तो निवृत्ति और पूरा ही मिले हुए हैं तो प्रवृत्ति हुई। तो बताया, बरोबर भगवान-भगवती पढ़ाते हैं। तो पढ़ाने वाले प्रवृत्ति में होने चाहिए या निवृत्ति में होना चाहिए? (किसी ने कहा- प्रवृत्ति में होने चाहिए) इसलिए पढ़ाने वाले प्रैक्टिकल में साकार शरीरधारी हुए या निराकार हुए? ज़रूर साकार शरीरधारी हैं; इसलिए शिव मंदिर में उनकी यादगार जलाधारी सहित शिवलिंग दिखाई गई है। जो सुप्रीम टीचर है, सुप्रीम बाप है, सुप्रीम सद्गुरु है, वो शिव के मंदिर में दिखाया गया है कि प्रवृत्ति में पड़ा है; निवृत्ति में नहीं है, इन्द्रियों की पूरी प्रवृत्ति है, फिर भी बुद्धियोग से बेहद की निवृत्ति में है और बाकी देह, देह की इन्द्रियों से प्रवृत्ति में हैं। तो बरोबर भगवान-भगवती पढ़ाते हैं। तो ये भी तो भला समझ जाए कि भगवती और भगवान इनको कौन ने बनाया? इनको जो पढ़ाई पढ़ाते हैं प्रैक्टिकल में; प्रैक्टिकल में पढ़ाते हैं या सिर्फ थ्योरी पढ़ाते हैं? ज्ञान सुनाकर चले जाते हैं या प्रैक्टिकल में पढ़ाते हैं? (किसी ने कहा- प्रैक्टिकल में पढ़ाते हैं) तो प्रैक्टिकल में भगवती-भगवान जो पढ़ाते हैं, उनको किसने भगवती-भगवान बनाया? ज़रूर ऊँचे-ते-ऊँचा भगवान है, जिससे ऊँचा और कोई होता ही नहीं। वो कौन- आत्माओं का बाप या मनुष्यों का बाप? (किसी ने कहा- आत्माओं का बाप) वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवान है। सदा अमन-चैन में रहने वाले उस ऊँचे-ते-ऊँचे भगवान ने उन्हों को बनाया होगा। उन्होंने बनाया होगा, एक ने या दो ने? 'उन्हों' किसको कहा जाता है? 'उसने' नहीं बोला। क्या बोला? उनने बनाया होगा। तो एक हुआ या दो हुए? (किसी ने कहा- ''त्वमेव माता च पिता'' दो हैं) वो कैसे बनाया, सो एक ही शिवलिंग कैसे है- यह बात आ करके यहाँ पूछो, जो समझाया जाए। यहाँ जब तक नहीं आवेंगे तो कोई समझ नहीं सकता। बाप का परिचय बाप के अलावा कोई दे ही नहीं सकता। ओम् शान्ति।